मनुष्य क्या है?

अध्याय
चार

अनुग्रह की वाचा

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2016 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., 316 लाईव ओक रोड़., कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1973, 1978, 1984, 2011 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। जानडरवॉन बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 192 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. सनातन सम्मति 2

क. समयकाल 2

ख. त्रिएकत्व 3

ग. पूर्णता 4

III. ईश्वरीय विधान 6

क. पाप 6

ख. मध्यस्थ 9

IV. तत्व 12

क. ईश्वरीय परोपकारिता 13

ख. मानवीय निष्ठा 14

ग. परिणाम 17

V. प्रशासन 19

क. आदम 20

ख. नूह 20

ग. अब्राहम 21

घ. मूसा 22

ङ. दाऊद 22

च. यीशु 22

VI. सारांश 25

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मनुष्य क्या है?

अध्याय चार

अनुग्रह की वाचा

परिचय

19वीं सदी में, चार्ल्स डिकेन्स ने एक उपन्यास *दो शहरों की कहानी* के नाम से प्रकाशित किया था। कहानी के अन्त में एक स्थान पर, नायक कारागृह में स्वयं को फाँसी पर चढ़ाए जाने का इन्तजार कर रहा है। परन्तु उसे एक गुप्त साजिश के तहत बचा लिया जाता है जिसमें एक स्वतंत्र व्यक्ति अपनी पहचान को उसके साथ बदल लेता है। कैदी को छोड़ दिया जाता है, और वह जो स्वेच्छा से उसे स्वतंत्रता प्रदान करता है उस के स्थान पर मर जाता है। कुछ इसी तरह के विशेष अर्थों में, यह दृश्य अनुग्रह की वाचा में विश्वासियों के अनुभवों से मेल खाता है। पाप में मनुष्य के गिर जाने ने उसे मृत्यु दण्ड के अधीन कर दिया था। परन्तु अनुग्रह की वाचा में, यीशु हमारा बिचवई और प्रतिनिधि बन गया। और उसने उस पद का उपयोग किया जिसे हम नहीं ले सकते थे। उसने हमारे ऊपर से अपने मृत्यु दण्ड को हमारे स्थान पर क्रूस के ऊपर मरने के द्वारा ले लिया। और उसकी धार्मिकता के कारण, उसने परमेश्वर की वाचा की आशीषों को अर्जित कर लिया, जिसे वह हम से साझा करता है। इस तरह से, हमारे पाप के बदले में मरने की अपेक्षा, अब हम परमेश्वर के अनुग्रह के माध्यम से मसीह में जीवन व्यतीत करते हैं।

मनुष्य क्या है?– धर्मवैज्ञानिक मानवविज्ञान की खोज के ऊपर हमारी श्रृंखला का यह चौथा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक, "अनुग्रह की वाचा" दिया है, क्योंकि हम उस अनुग्रहमयी वाचा के सम्बन्ध के ऊपर ध्यान करेंगे जिसे परमेश्वर ने मनुष्य के पाप में पतित हो जाने के पश्चात् उसके साथ बाँधा।

आरम्भ में, परमेश्वर ने मनुष्य के साथ एक वाचा को आदम के द्वारा बाँधा था, जिसे अक्सर हम "कार्यों की वाचा" कह कर पुकारते हैं। इस वाचा का परिणाम मनुष्य के लिए जीवन हो सकता था। परन्तु आदम ने इस वाचा की शर्तों का उल्लंघन किया, और हमारी पूरी जाति पाप के शाप के अधीन हो गई। धन्यवाद सहित, परमेश्वर ने हमें हमारी पापपूर्ण दुर्गति में ही बिना किसी आशा के नहीं छोड़ दिया। इसकी अपेक्षा, उसने मनुष्य के साथ उसके सम्बन्ध को बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रतिज्ञाओं को जोड़ दिया, और उन प्रतिज्ञाओं को जिसे धर्मशास्त्री अक्सर "अनुग्रह की वाचा" कह कर पुकारते हैं के साथ संरक्षित कर दिया। *वेस्टमिन्स्टर विश्वास के अंगीकार* धर्मपुस्तिका के, अध्याय 7, के खण्ड 3 में अनुग्रह की वाचा के उद्देश्य का विवरण ऐसे दिया गया है:

> **परमेश्वर एक दूसरी [वाचा] को बाँधने के लिए प्रसन्न था, जिसे सामान्य रूप से अनुग्रह की वाचा कह कर पुकारा जाता है; जिसके द्वारा वह मुफ्त में पापियों को उसमें विश्वास करने की मांग करते हुए; जीवन और यीशु मसीह के द्वारा उद्धार का प्रस्ताव देता है, ताकि वे बचाए जाएँ।**

जब अंगीकार यह कहता है कि वाचा को "सामान्य रूप से" अनुग्रह की वाचा कह कर पुकारा जाता है, तो इसका अर्थ यह होता है कि यह शब्द बाइबल की अपेक्षा धर्मशास्त्रियों की ओर से आते हैं। परन्तु यह हमें चिन्तित नहीं करने चाहिए, क्योंकि ऐसा ही अन्य शब्दों जैसे "त्रिएकत्व" के साथ भी सत्य है। और "अनुग्रह की वाचा" की शब्दावली के द्वारा जिस विचार को सारांशित किया गया है वह ठोस रूप से पवित्रशास्त्र में निहित है।

वे जिनके पास यीशु में बचाने वाला विश्वास है, अनुग्रह की वाचा उस नुक्सान की मरम्मत करती है जिसे हमने आदम के पाप के द्वारा प्राप्त किया है। और यह ऐसा मसीह में परमेश्वर की दया के आधार पर क्षमा और छुटकारे के प्रबन्ध को प्रदान करने के द्वारा करती है।

अनुग्रह की वाचा के ऊपर हम हमारे अध्याय को चार भागों में विभाजित करेंगे। प्रथम, हम परमेश्वर की सनातन सम्मति की पृष्ठभूमि की खोज करेंगे। दूसरा, हम ईश्वरीय परोपकारिता के शब्दावली के उदगम का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विवरण देंगे। तीसरा, हम इसके तत्वों का वर्णन करेंगे। और चौथा, हम इसके ऐतिहासिक प्रशासन का सर्वेक्षण करेंगे। आइए परमेश्वर की सनातन सम्मति के साथ आरम्भ करें।

सनातन सम्मति

अनुग्रह की वाचा की जड़ें इतिहास के लिए निर्मित की गई परमेश्वर की अनन्त योजना में निहित हैं, जिसे धर्मशास्त्री उसकी "अनन्त सम्मति" या "अनन्त राजाज्ञा" के रूप में उद्धृत करते हैं। परमेश्वर की अनन्त राजाज्ञा के दृष्टिकोण से, अनुग्रह की वाचा त्रिएकत्व के व्यक्तियों के मध्य में एक सहमति से बाहर निकल कर आती है।

इस संसार की रचना से पहले, परमेश्वर जानता था कि मनुष्य पाप में गिर जाएगा। और उस वास्तविकता के प्रकाश में, उसने हमें बचाने के लिए एक योजना को रच दिया। और यह योजना सभी त्रिएकत्व के सभी तीनों व्यक्तियों की स्वयं हमारे उद्धार के भिन्न पहलूओं के लिए सम्मिलित कर देती है। इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी उन सुनिश्चित समर्पणों को जिन्हें उन्होंने निर्मित किया था, के लिए असहमत हैं। परन्तु हम सभी इस बात पर सहमत हैं कि परमेश्वर ने हमारे बदले में मसीह की मृत्यु के द्वारा छुटकारे की योजना को बनाया।

> **इस संसार के आरम्भ में, परमेश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में, मनुष्य के साथ क्या है, के लिए पहले से ही एक योजना को बना दिया था...और इसलिए, अपनी सृष्टि में, यीशु मसीह के लिए बनाई हुई योजना कोई बाद की सोच नहीं थी; उदाहरण के लिए, यीशु अन्तत: वह होगा जो पाप की इस समस्या से चंगा करने और छुटकारा देने के लिए आएगा...और इसलिए यही कुछ तो हम बाइबल में पढ़ते हैं उसने पहले से ही स्त्री के वंश को बचा लिया जो सर्प को कुचल देगा। और जब वह स्त्री के वंश की बात करता है तो उसका संकेत यीशु मसीह के जन्म की ओर है, जैसा कि हम क्रिसमस की कहानी में जानते हैं...और यह योजना अतीत की अनन्तता से परमेश्वर की है।**
>
> **- फ्रौफ. मूमो किसाओ**

इस अध्याय में हमारे प्रयोजन की प्राप्ति के लिए, हम हमारे ध्यान को परमेश्वर की सनातन सम्मति पर्यावाची के रूप में हिन्दी बाइबल में प्रयुक्त शब्द मनसा के मात्र तीन पहलूओं की ओर ध्यान केन्द्रित करेंगे जो हमारे छुटकारे से सम्बन्धित हैं। प्रथम, हम परमेश्वर की सम्मति के समयकाल को देखेंगे। दूसरा, हम त्रिएकत्व के प्रत्येक सदस्य को दी गई भूमिकाओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। और तीसरा, हम अनुग्रह की वाचा में परमेश्वर की सनातन सम्मति की पूर्णता को देखेंगे। आइए सबसे पहले इस सहमति के समयकाल को देखें।

समयकाल

परमेश्वर की मनुष्य जाति को उसके पापों के परिणाम और भ्रष्टता से छुटकारा देने की योजना उसके द्वारा इस ब्रह्माण्ड की रचना को किए जाने से पहले निर्मित की गई थी। यह समयकाल इफिसियों 3:11 जैसे स्थानों में उल्लेख किया गया है, जो परमेश्वर की "सनातन मनसा" के बारे में बात करता है, जिसे ऐतिहासिक रूप से यीशु के द्वारा पूरा किया गया। दूसरा थिस्सलुनीकियों 2:13 कहता है कि हमें "उद्धार के लिए" आरम्भ से ही चुन लिया गया है। और 2 तीमुथियुस 1:9, 10 उस अनुग्रह की बात करता है जो "समय के आरम्भ से पहले" हमें दिया गया था।

उदाहरण के लिए, इफिसियों 1:3-4 में पौलुस ने क्या लिखा है, उसे सुनिए:

> **हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उस ने हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों (इफिसियों 1:3-4)।**

यहाँ, पौलुस ने कहा कि हमारा छुटकारा जगत के सृजे जाने से पहले ही निर्धारित कर दिया गया था। और इफिसियों 1:11 में हम पढ़ते हैं:

> **उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने (इफिसियों 1:11)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस, और नए नियम के कई अन्य संदर्भों में, परमेश्वर के उद्धार की राजाज्ञा को यूनानी शब्द *प्रोरिजो* से उद्धृत किया गया है। इस शब्द को अधिकांश सामान्य तौर पर "पूर्वनिर्धारण" या पहले से ठहराया में भाषान्तरित किया गया है। इस संदर्भ में, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की उद्धार की सनातन राजाज्ञा को पहले से ही ठहरा दिया गया था, या इस संसार के आरम्भ होने से पहले से ही निर्धारित कर दिया गया था। शब्द *प्रोरिजो* रोमियों 8:29, 30 और इफिसियों 1:5 जैसे स्थानों में भी उपयोग किया गया है।

भिन्न धर्मवैज्ञानिक परम्पराएँ उद्धार के सम्बन्ध में परमेश्वर की सनातन सम्मति को भिन्न तरीकों से समझती हैं। कुछ शिक्षा देती हैं कि परमेश्वर ने विशेष लोगों को नहीं चुना था, अपितु सामान्य रूप से यह घोषणा की थी कि वे सभी जो मसीह को स्वीकार करेंगे वे बचाए जाएंगे। अन्य सोचते हैं कि परमेश्वर ने समय के गलियारे से देखा और उन विशेष लोगों को स्वीकार कर लिया जिन्हें वह जानता था कि वे विश्वास करेंगे। इतना होने पर भी अन्य यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने कुछ विशेष लोगों को मात्र अपने भले आनन्द के आधार पर चुन लिया, और यह कि उसके द्वारा चुना जाना यह गारंटी देता है कि वे मसीह में विश्वास करेंगे। परन्तु हम सभी इस बात से सहमत हो सकते हैं कि इस संसार की नींव रखे जाने से पहले ही परमेश्वर का पापियों को बचाने का निर्णय उसकी सनातन सम्मति का एक भाग था।

परमेश्वर की सनातन सम्मति को उसके समयकाल के संदर्भ में देख लेने के पश्चात्, आइए हम त्रिएकत्व के सदस्यों की आभासित होती हुई भूमिकाओं की ओर मुड़ें।

त्रिएकत्व

परमेश्वर के छुटकारे की सनातन की योजना में त्रिएकत्व के तीन व्यक्ति कार्य करते हुए सम्मिलित हैं। पतित मनुष्य को पाप के शाप से छुटकारा की योजना के कारण पिता सहमति का उद्गम है। विशेष रूप में, पवित्रशास्त्र कहता है कि यह पिता की योजना थी कि वह हमें बचा ले। उदाहरण के लिए, इफिसियों 3:10-11 में, पौलुस शिक्षा देता है:

> **[परमेश्वर] की मनसा यह थी कि... उसका विभिन्न प्रकार का ज्ञान... प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी (इफिसियों 3:10-11)।**

पौलुस के अनुसार, यह *पिता* की सनातन मनसा थी कि मसीह के द्वारा हमारा छुटकारा पूरा हो। हम इसी बात को इफिसियों 1:4; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3; और 1 पतरस 1:20 में देखते हैं।

इसी तरह से, पुत्र अपने पूर्ण ईश्वरीय स्वभाव में, एक पूर्ण मानवीय स्वभाव को जोड़ने के लिए सहमत हो गया, ताकि वह पापियों की ओर से मर सके। इसलिए ही 2 तीमुथियुस 1:9 में, पौलुस कहता है कि हमने जगत की उत्पत्ति से पहले पुत्र के अनुग्रह को प्राप्त किया था। और हम कुछ ऐसी ही बात को यूहन्ना 17:4, 5 में देखते हैं।

और ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर की सनातन सम्मति ने पिता और पुत्र की भूमिकाओं को निर्धारित कर दिया है, इसने साथ ही पवित्र आत्मा की भूमिका को भी निर्धारित कर दिया। पवित्र आत्मा पुत्र के कार्य को सामर्थ्य देने और सक्षम बनाने में, और उद्धार को उन लोगों के ऊपर लागू करने के लिए सहमत हो गया जो पुत्र के द्वारा छुटकारा पाते हैं। सुनिए 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 में पौलुस ने क्या लिखा है:

> **पर हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ (2 थिस्सलुनीकियों 2:13)।**

इस संदर्भ में, पौलुस संकेत देता है कि पिता की पसन्द आरम्भ में, अर्थात् सृष्टि से पहले ही, निर्धारित हो चुकी थी। और इस योजना में पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे ऊपर उद्धार को लागू करते हुए पवित्रीकरण के कार्य के प्रगटीकरण की सहमति सम्मिलित थी। इसके अतिरिक्त, नाम "प्रभु" कदाचित यहाँ पर यीशु को उद्धृत करता है, ताकि त्रिएकत्व के तीनों व्यक्तियों का उल्लेख हो:

त्रिएकत्व के तीन व्यक्ति, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हमारे उद्धार में सम्मिलित थे और हैं। अतीत के सनातन काल में पिता ने योजना बनाई, उसने लोगों को चुन लिया, हम चाहे जैसे भी हों, अपने अनुग्रह में, मसीह में चुन लिया और पुत्र के साथ वाचा में बाँध दिया, कि पुत्र हमारे छुटकारे के लिए आएगा। उसने हमें पुत्र दे दिया, जैसा कि यीशु यूहन्ना 17 में अपनी प्रार्थना में कहता है, कि पिता ने हमें उसे अतीत के सनातन काल– यहाँ तक कि जगत की उत्पत्ति के पहले से ही दे दिया है। और पुत्र आ गया, हमारे मानवीय स्वभाव को अपने ऊपर ले लिया, उस आज्ञाकारिता को प्रगट किया जिसे प्रगट करने में हम असफल हो गए थे, स्वयं को बलिदान के रूप में दे दिया, और जीवित हो उठा। इस तरह से वह हमारे छुटकारे को *पूरा* करने के लिए आया। पिता योजनाकार, *अनुमोदक* और पुत्र को देने वाला है। पुत्र हमारे उद्धार को पूरा करने वाला है, और पवित्र आत्मा हमारे उद्धार को *लागू* करने वाला है। यह वह है जो हमारे पत्थर के हृदयों में उद्धार को ले आता है, परमेश्वर के वचन के प्रति इसे कोमल बना देता है, जो हमें मसीह में विश्वास और भरोसे और विशेष रूप से मसीह के साथ एकीकृत होने की क्षमता देता है।

- डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

परमेश्वर की सनातन सम्मति को त्रिएकत्व के व्यक्तियों और समयकाल के सम्बन्ध में ध्यान दे लेने के पश्चात्, आइए हम अनुग्रह की वाचा में इस सम्मति के पूर्ण होने को देखें।

पूर्णता

परमेश्वर की सनातन सम्मति इतिहास में क्या कुछ घटित होगा की योजना है। और अनुग्रह की वाचा उसकी इस योजना को पूर्ण करती है। त्रिएकत्व के व्यक्ति सदैव से जानते थे कि मनुष्य पाप में गिर जाएगा। और उन्होंने सदैव मसीह के जीवन, मृत्यु, गाड़े जाने, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा मनुष्य को छुटकारा देने का लक्ष्य रखा। उन्होंने इन बातों को अपनी सनातन सम्मति में ठहरा दिया। और उन्होंने इसे अनुग्रह की वाचा के पूरे इतिहास में लागू कर दिया।

उदाहरण के लिए, ध्यान दें, कि पिता ने मसीह में हमारे छुटकारे को पहले से ही ठहराया दिया। और तब उसने इस ठहराए जाने को अनुग्रह की वाचा के द्वारा अपने पुत्र को भेजने और आत्मा को उसके कार्य को किए जाने के द्वारा पूर्ण कर दिया। उसने साथ ही पुत्र को मसीहा या मसीह के पद पर नियुक्त कर दिया, जो छुटकारे के कार्य के लिए आवश्यक था। प्रेरितों के काम 2:36 में, पतरस ने यहूदियों को ऐसे कहा:

परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी (प्रेरितों के काम 2:36)।

यूहन्ना 5:36 में, यीशु ने स्वयं कहा:

जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है (यूहन्ना 5:36)।

और यूहन्ना 6:38 में, यीशु ने यह जोड़ा:

मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ (यूहन्ना 6:38)।

स्पष्ट है, कि जब परमेश्वर पुत्र, यीशु मसीह अपने उद्धार के कार्य को करने के लिए आया, तो वह पिता की योजना को पूरा कर रहा था। पिता ने भी पुत्र को अपना सामर्थी आत्मा बिना किसी सीमा के दिया, जैसा कि हम यूहन्ना 3:34 में से शिक्षा पाते हैं। और उसने पुत्र के पूर्ण मानवीय स्वभाव को तैयार किया, जैसा कि इब्रानियों 10:5 में वर्णित किया गया है।

अपनी ओर से, परमेश्वर पुत्र ने भी मनुष्य के छुटकारे के लिए सनातन सहमति को पूर्ण किया। उसने अपनी ईश्वरीय महिमा को छोड़ते हुए, इसमें अतिरिक्त मानवीय स्वभाव को अपने पूर्ण ईश्वरीय स्वभाव में

जोड़ते हुए, एक सिद्ध जीवन को जीया, और एक प्रायश्चित की मृत्यु के रूप में मर गया। सुनिए पौलुस फिलिप्पियों 2:5-8 में क्या विवरण देता है:

> **मसीह यीशु...जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु - हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली (फिलिप्पियों 2:5-8)।**

हमें हमारे पापों से बचाने के लिए यीशु क्रूस के ऊपर विशेष उद्देश्य के लिए मरने के लिए देहधारी हुआ। और 2 तीमुथियुस 1:9, 10 इस ओर संकेत देते हैं कि उसने इस अनुग्रह को पतित मनुष्य को परमेश्वर की सनातन सम्मति को पूरा करने के द्वारा प्रदान किया। सुनिए कैसे इब्रानियों 2:13-17 में वह इसे लिखता है:

> **[यीशु] कहता है, "देख, मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए।" इसलिये जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उन के समान उन का सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे (इब्रानियों 2:13-17)।**

यहाँ पर, लेखक यशायाह 8:18 की व्याख्या इस अर्थ के लिए करता है कि पुत्र को उन लोगों के प्रायश्चित के लिए मरना था जिसे परमेश्वर ने उसे पहले, अपनी सनातन सम्मति को पूरा करने के लिए दिया था। हम इसी तरह के कथनों को रोमियों 8:3, 4 और गलातियों 4:4, 5 में पाते हैं।

और पवित्र आत्मा भी परमेश्वर की सनातन सम्मति में अपने हिस्से के कार्य को पूरा करता है। वह पुत्र के देहधारण और परिणामस्वरूप उसकी माता में पुत्र के मानवीय स्वभाव को धारण करने के कार्य को सामर्थी और सक्षम बनाता है, जैसा कि मत्ती 1:20 और लूका 1:34, 35 में वर्णित किया गया है। पवित्र आत्मा ने साथ ही मसीह की मृत्यु को क्रूस के ऊपर सामर्थी बनाया, जैसा कि हमें इब्रानियों 9:14 में कहा गया है। और उसने मसीह के पुनरूत्थान के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जैसा कि हमें रोमियों 8:11 में शिक्षा दी गई है।

इसके अतिरिक्त, पवित्र आत्मा हमारे ऊपर उद्धार को लागू करने की उसकी सहमति को भी निरन्तर पूरी कर रहा है। वह हमारी आत्माओं को नवीकृत करता है, जैसा कि हमने यूहन्ना 3:5-8 और तीतुस 3:5-7 में देखा। वह हमें पाप का सामना करने के लिए सामर्थी बनाता है, जैसा कि हम रोमियों 7:6 में शिक्षा पाते हैं। वह हमें आत्मिक वरदान देता है जो कि हमारे उद्धार का अंश है, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 12:11 कहता है। और वह हमारे उद्धार को सुरक्षित रखता है, जैसा कि इफिसियों 1:13, 14 हमें शिक्षा देता है। हम आत्मा के कार्य को यह कहते हुए सारांशित कर सकते हैं कि वह त्रिएक्तव का ऐसा व्यक्ति है जो इस संसार में पुत्र के उद्धार के कार्य को सक्षम बनाता, सामर्थी और लागू करता है। जब कभी भी परमेश्वर की सामर्थ्य दिखाई देती है और जहाँ कहीं भी उद्धार की पहचान होती है, पवित्र आत्मा हमारे छुटकारे के सम्बन्ध में परमेश्वर की सनातन सम्मति को पूरा कर रहा है।

हमारे छुटकारे के सम्बन्ध में परमेश्वर की सनातन सम्मति विश्वासियों के लिए एक महान् तसल्ली होनी चाहिए। यह हमें स्मरण दिलाता है कि जिन त्रासदियों को हम इतिहास में देखते हैं, जिसमें यीशु मसीह की हत्या किया जाना भी सम्मिलित है, वह समस्याएँ नहीं है जिनके समाधान करने के लिए परमेश्वर संघर्ष कर रहा है। ये ऐसे अप्रत्याशित संकट नहीं हैं जिनके लिए रचनात्मक समाधान की आवश्यकता है। इसकी अपेक्षा, ये ऐसी बाधाएँ हैं जिनकी रचना छुटकारे के महान् प्रयोजनों को पूरा करने के लिए किया गया है। इसलिए, चाहे जीवन में कुछ भी क्यों न घटित हो जाए – और चाहे बहुत अधिक भयानक बातें क्यों न घटित हो जाएँ और आगे होंगी – परमेश्वर के पास एक योजना है। और यह योजना *असफल* न होते हुए अनुग्रह की वाचा के माध्यम से विश्वासियों के लिए उद्धार और महिमा को लाएगी।

परमेश्वर की सनातन सम्मति में अनुग्रह की वाचा की पृष्ठभूमि को देख लेने के पश्चात्, आइए हम इसके उद्गम को ईश्वरीय विधान के संदर्भ में देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

ईश्वरीय विधान

परमेश्वर की सनातन सम्मति के विपरीत, जिसे जगत की उत्पत्ति के *पहले* से ही ठहरा दिया गया था, परमेश्वर का विधान *इतिहास* में सृष्टि के ऊपर शासन करने और इसके संरक्षण का है। इसमें ब्रह्माण्ड के साथ उसके किए गए सभी क्रिया कलाप सम्मिलित हैं, जिसमें विशेष ध्यान उसके प्राणियों और उनके व्यवहारों के ऊपर दिया गया है। इसलिए, जब हम मनुष्य के पाप की प्रतिक्रिया के रूप में उद्धार के लिए परमेश्वर के उद्धार के बारे में सोचते हैं, तो हम अनुग्रह की वाचा तक विधान के दृष्टिकोण से पहुँच रहे हैं।

हम अनुग्रह की वाचा को विधान के संदर्भों में दो विचारों की ओर देखने के द्वारा सम्बोधित करेंगे। सर्वप्रथम, हम इसकी खोज करेंगे कि कैसे मानवीय पाप ने अनुग्रह की वाचा को आवश्यक बना दिया। और दूसरा, हम अनुग्रह की वाचा में मसीह की भूमिका को एक बिचवई के रूप में देखेंगे। आइए सर्वप्रथम हम यह देखें कि कैसे हमारे पाप ने अनुग्रह की वाचा को आवश्यक बना दिया।

पाप

ऐतिहासिक रूप से, मनुष्य की उत्पत्ति 1:26-28 में दी हुई सांस्कृतिक आदेश को पूरा किए जाने की क्षमता की बहाली के लिए अनुग्रह की वाचा आवश्यक थी। जैसा कि हमने पहले के एक अध्याय में देखा था, आदम और हव्वा ने परमेश्वर की वाचा की शर्तों को निषेध किए हुए भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाने के द्वारा तोड़ दिया। और परमेश्वर ने अपनी प्रतिक्रिया मनुष्य को शापित करने में व्यक्त की। इसके परिणामस्वरूप हमारा अस्तित्व भ्रष्ट हो गया, हम परमेश्वर और अन्य लोगों से दूर हो गए और हम पर भौतिक और आत्मिक मृत्यु आ गई।

मानवता वैधानिक रूप से परमेश्वर के शापों की अधिकारी है। परन्तु इन शापों ने एक समस्या को उत्पन्न कर दिया; कुल मिलाकर, परमेश्वर ने मनुष्य को उसकी महिमा को प्रतिबिम्बित करने, और ऐसे शासकों के रूप में रचा था जो उसके स्वर्गीय राज्य को पूरी पृथ्वी के ऊपर विस्तार कर देंगे। हमारी पतित परिस्थिति में, हमने इन कार्यों को उसकी सन्तुष्टि को ले आने तक पूरा न कर सके। हमारी भ्रष्टता ने हमें उसको प्रसन्न करने में *अक्षम* कर दिया, और यहाँ तक उसे प्रसन्न करने की *चाहत* को भी। हमारे अलगाव ने हमें उसकी उपस्थिति से दूर रखा और इस पूरे संसार में मानवीय संस्कृति को सहयोग करने से भी रोके रखा। और मृत्यु ने हमें उसके राज्य की आशीषों के आनन्द से दूर रखा।

परन्तु परमेश्वर ने हमें हमारी दुर्गति की अवस्था में ही आशारहित नहीं छोड़ दिया। इन सभी बड़ी समस्याओं के सामने, परमेश्वर का समाधान हमारा छुटकारा था। उसने आदम और हव्वा के विरोध में उसके वाचाई न्याय को रोके नहीं रखा। अपितु उसने इसे नियंत्रित अवश्य किया कि कहीं वे तुरन्त वहीं उसी समय मर न जाएँ। और इसके अतिरिक्त, उसने उन्हें बड़े अनुग्रह से छुटकारे का प्रस्ताव दिया। छुटकारे का यह प्रस्ताव सर्प के प्रति परमेश्वर के शाप में प्रगट होता है। उत्पत्ति 3:15 में, परमेश्वर ने सर्प से कहा:

> **और मै तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।**

वाचाई न्याय को संचालित करने के लिए, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि हव्वा का मानवीय वंश अन्तत: सर्प के सिर को कुचल डालेगा। प्रकाशितवाक्य 12:9 सर्प की पहचान शैतान के साथ करता है। अत: उत्पत्ति की प्रतिज्ञा परमेश्वर की भविष्यद्वाणी का एक तरीका था कि मनुष्य अन्तत: शैतान के पापपूर्ण राज्य के ऊपर विजय को प्राप्त कर लेगा। यह व्यक्ति मनुष्य को बचाएगा और वह उन्हें पाप की पीड़ा और दोष से बचा लेगा। धर्मशास्त्री अक्सर इस घोषणा को लेटिन शब्द *प्रोटोइवैंग्लियुम*, या इसके यूनानी भाषा आधारित-सामान्तर शब्द *प्रोटो-इवेंग्लियोन* से करते हैं, और दोनों का अर्थ "प्रथम सुसमाचार" से था। और यह प्रथम सुसमाचार अनुग्रह की ऐतिहासिक वाचा के आरम्भ का प्रतीक थी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

लुईस ब्रकोख़, जो 1873 से 1957 में रहे, ने इस वाचा के अनुग्रहकारी स्वभाव की व्याख्या को अपनी पुस्तक *विधिवत् धर्मविज्ञान* के भाग 2, खण्ड 3, के अध्याय 3 में इस इस तरह से दिया है। सुनिए वह वहाँ पर क्या कहता है:

> **इस वाचा को एक अनुग्रहकारी वाचा कह कर पुकारा जा सकता है, क्योंकि इसमें परमेश्वर ने अपने दायित्वों को पूर्ण करने की निश्चितता का प्रस्ताव दिया है; क्योंकि वह स्वयं उसके पुत्र में इस निश्चितता का प्रबन्ध करता है, जो न्याय की मांग को पूरा करता है, और अपने अनुग्रह के कारण, पवित्र आत्मा का कार्य करने में प्रगट होती है, वह मनुष्य को उसकी वाचा के उत्तरदायित्वों पर खरा उतरने की क्षमता देता है। वाचा परमेश्वर के अनुग्रह में से आरम्भ होती है, परमेश्वर के अनुग्रह के गुण में संचालित होती है, और परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा पापियों के जीवनों में प्रगट होती है। पापियों के लिए आरम्भ से लेकर अन्त तक अनुग्रह है।**

आदम के साथ अपनी आरम्भिक वाचा में, मनुष्य की आशीषें और शाप पूरी तरह से अपने स्वयं के कार्यों पर टिके थे। यदि हम आज्ञापालन करते हैं, तो हम आशीषों को पाते थे; यदि हम अनाज्ञाकारिता करते हैं, तो हमें शाप दिया जाता है। इसलिए ही परमेश्वर ने मनुष्य के साथ प्रथम वाचा को "कार्यों की वाचा" कह कर पुकारा है। परन्तु अनुग्रह की वाचा भिन्न है। स्वयं के कार्यों के ऊपर निर्भर रहने की अपेक्षा, यह यीशु के कार्यों के ऊपर निर्भर रहती है। वह परमेश्वर की वाचा की शर्तों को हमारे लिए पूरी करता है। और तब वह अनुग्रहकारी रूप से अपनी वाचा की आशीषों को उसके लोगों के साथ साझा करता है जिन्हें वह बचाता है।

> **अपने धर्मविज्ञान में, हम कई बार कार्यों की वाचा के बारे में बात करते हैं, जिसे परमेश्वर ने आदम के पाप में गिरने से पहले, और अनुग्रह की वाचा जिसे परमेश्वर पाप से पतित हुई मानवता के साथ बाद में बाँधा था, एक मार्ग के रूप में परमेश्वर यीशु मसीह के महान् उद्धार को उसे देने, हमें देने के लिए, बाँधता है। और इन वाचाओं में भिन्नता को जानना महत्वपूर्ण है। इन वाचाओं में कुछ भिन्न बातें घटित हो रही हैं, और तौभी वे कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण रूप में सचेत तरीकों से एक दूसरे के साथ सम्बद्ध है। इन दोनों की भिन्नता को समझने के संदर्भों में, जिस बात को मैं सोचता हूँ वह इन दोनों के शब्दों "कार्यों" और "अनुग्रह" की महत्वपूर्णता है...हम कह सकते हैं कि कार्यों की वाचा कुल मिलाकर व्यवस्था है, जबकि अनुग्रह की वाचा हमें सुसमाचार की घोषणा करती है। परन्तु इतना कहने पर भी, उनके सम्बन्ध को देखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि ऐसा नहीं कि मानो परमेश्वर ने हमें हमारे पाप में पतित होने के पश्चात् बस यों ही हम पर से कार्यों की वाचा को निरस्त कर दिया। ऐसा नहीं है कि मानो परमेश्वर ऐसे कहता है कि, "ठीक है, पाप का वास्तव में कोई अर्थ ही नहीं है," या "मेरी व्यवस्था का पालन किया जाना वास्तव में कोई अर्थ नहीं रखता।" अनुग्रह की वाचा के सुसमाचार का एक अंश यह है कि मसीह वास्तव में आया और उसने परमेश्वर की व्यवस्था को सन्तुष्ट कर दिया है। मसीह ने उस सब को पूरा किया जिसकी मांग कार्यों की वाचा ने की थी। उसने परमेश्वर की व्यवस्था का आज्ञापालन किया और उसने साथ इस व्यवस्था के उल्लंघन के जुर्माने की पीड़ा को सहन किया। और इस तरह से, जब हम मसीह को अनुग्रह की वाचा में देखते हैं, तो हम उसके पास दौड़े चले आते हैं, और हम उसमें ऐसे विश्वास करते हैं कि मानो उसने वास्तव में उस सब को पूरा कर दिया है जिसे मूल रूप से परमेश्वर ने मनुष्य से पूरा करने की चाह की थी।**
>
> **- डॉ. डेविट वॉनड्रूनेन**

विधान के इस दृष्टिकोण से, जब मनुष्य ने पाप किया तब परमेश्वर को पूर्ण रूप से दण्डित कर सकता था। परन्तु जैसा कि हमने देखा है, इससे उसके हमारे लिए ठहराए हुई मनसा पूरी नहीं हो पाती। दुर्भाग्य से, कार्यों की वाचा ने ऐसा कोई मार्ग नहीं दिया जिससे वाचा की अनाज्ञाकारिता क्षमा की जा सकती थी। इससे भी गंभीर बात तो यह है, कि परमेश्वर बस यों ही कार्यों की वाचा को अन्देखा नहीं कर सकता है, क्योंकि एक वाचा एक गंभीर शपथ है। और परमेश्वर अपनी शपथों को तोड़ नहीं सकता है।

इस तरह से, परमेश्वर ने अनुग्रह की वाचा को समस्या के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया। हम अनुग्रह की वाचा को कार्यों की वाचा की निरन्तरता और विस्तार के रूप में सोच सकते हैं। अनुग्रह की वाचा कार्यों की वाचा की सभी शर्तों को अपने में निहित करती है, जिसमें इसकी ईश्वरीय परोपकारिता, मनुष्य के निष्ठावान् होने की शर्तें और परिणाम भी सम्मिलित हैं। इस तरीके से, यह कार्यों की वाचा को संरक्षित करती है। परन्तु यह साथ ही अतिरिक्त ईश्वरीय परोपकारिता, मनुष्य की निष्ठा के लिए अतिरिक्त शर्तों, और अतिरिक्त परिणामों को भी परिचित कराती है। और यही अतिरिक्त बातें हमारे लिए छुटकारे के मार्ग का प्रबन्ध करते हैं।

यह देख लेने के पश्चात् कि मनुष्य के पाप की प्रतिक्रिया के रूप में अनुग्रह की वाचा ने ईश्वरीय विधान की मांग की, आइए हम हमारे ध्यान को वाचा के बिचवई अर्थात् मध्यस्थ मसीह की भूमिका के ऊपर केन्द्रित करें।

मध्यस्थ

कार्यों की वाचा ने एक विशेष अधिराज-अधिपति जागीरदार की सन्धि के ढांचे को, वाचा में आने वाले समूहों के मध्य के सरल सम्बन्ध के रूप में लिया। परमेश्वर अधिराज था, और मनुष्य अधीनस्थ अधिपति जागीरदार था। और आदम ने परमेश्वर के अधीनस्थ अधिपति जागीरदार के रूप में प्रदान और उनके प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया।

अनुग्रह की वाचा, में यही समूहों की स्थिति यथावत् बनी रही। परमेश्वर अभी भी अधिराज है, और मनुष्य अभी भी अधीनस्थ जागीरदार है, और कम से कम सबसे पहले, आदम अभी भी सारी मनुष्य जाति का प्रतिनिधि या प्रधान था। परन्तु इन समूहों के अतिरिक्त, परमेश्वर पुत्र, त्रिएकत्व का दूसरे व्यक्ति ने इस वाचा के मध्यस्थ या बिचवई के रूप में प्रवेश किया। एक मध्यस्थ होने के नाते, पुत्र परमेश्वर की वाचा के लोगों के लिए मथ्यस्थ का कार्य करता है। वह हमें दोनों अर्थात् हमारे पापों के दण्ड और दोष को अपने ऊपर लेने के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल मिलाप करता है। वह वाचा की अखण्डता को बनाए रखता है, और हमारे बदले में वाचा के शापों की पीड़ा को अपने ऊपर लेते हुए उसके लोगों के लिए जीवन व्यतीत करता है। ठीक इसी तरह से, वाचा की शर्तों के लिए मनुष्य की निष्ठा के माध्यम से, पुत्र स्वयं के लिए वाचा की आशीषों को *कमा* लेते हैं। और तब वह इन्हें छुटकारा पाए हुए पापियों के साथ साझा करता है।

लुईस ब्रकोख़ का ध्यान मध्यस्थ के रूप में पुत्र की भूमिका की बात वाचा की "निश्चितता" में है जिसे वह अपनी पुस्तक *विधिवत् धर्मविज्ञान* के भाग 2, खण्ड 3, के अध्याय 3 में उद्धृत करता है। उसकी व्याख्या के इस भाग को पुनः सुनिए:

> **इस वाचा को... अनुग्रहकारी वाचा कह कर पुकारा जा सकता है, क्योंकि... परमेश्वर ने अपने दायित्वों को पूर्ण करने की निश्चितता का प्रस्ताव दिया है; [और] क्योंकि वह स्वयं उसके पुत्र में इस निश्चितता का प्रबन्ध करता है।**

पुत्र अनुग्रह की वाचा की मध्यस्थता करने लगा जब इसे सबसे पहले –अदन की वाटिका में बाँधा गया था, जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को छुटकारे का प्रस्ताव दिया था। और वह अभी तक निरन्तर इसकी मध्यस्थता करता आ रहा है। पूरे पुराने नियम के युग में, उसकी मध्यस्थता ने पुराने नियम के सन्तों को उद्धार और क्षमा, प्रतिज्ञात भविष्य के कार्य के ऊपर आधारित होकर प्रदान की। कोई भी स्वयं के गुण या क्षमताओं के ऊपर आधारित होकर बचाया नहीं गया है, क्योंकि आज्ञाकारिता का कोई भी कार्य हमारे पापों को मिटा नहीं सकता है। और कोई भी पशुओं के बलिदान के ऊपर आधारित होकर नहीं बचाया जा सकता है, क्योंकि किसी भी पशु की मृत्यु वास्तव में मनुष्य के लिए एक पर्याप्त विकल्प नहीं हो सकती है। इब्रानियों का लेखक इब्रानियों 10:11 में ऐसे लिखता है:

> **हर एक याजक तो खड़े होकर प्रति दिन सेवा करता है; और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार-बार चढ़ाता है (इब्रानियों 10:11)।**

जैसा पौलुस कुलुस्सियों 2:17 में वर्णित करता है:

> **क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएँ मसीह की हैं (कुलुस्सियों 2:17)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

आप जानते हैं, कई प्रश्नों में एक जिसे हम बहुत ही सहजता से स्वयं पूछते हैं जब हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि हम मसीह के ऐतिहासिक कार्य के ऊपर निर्धारित हो कर बचाए गए हैं, तो अब हम पुराने नियम से सन्तों के बारे में क्या कहें? क्या वे बचाए गए थे? क्या वे मसीह के इस पूरे किए हुए कार्य के द्वारा बचाए हुए थे यद्यपि यह अभी घटित नहीं हुआ था? या क्या परमेश्वर कदाचित् उनके ऊपर शासन करने के लिए विभिन्न पृष्ठभूमियों के माध्यम से कार्य कर रहा था? बाइबल हमें बताती है कि वे विश्वास के द्वारा बचाए गए थे, प्रतिज्ञाओं में उनके विश्वास ने जिसे परमेश्वर ने उनके लिए बनाया था। अब, यह उनके उद्धार के लिए पर्याप्त था, परन्तु किस आधार पर पुराने नियम के सन्तों को उद्धार का प्रस्ताव दिया गया था, जिन्होंने बचाए जाने वाले विश्वास को व्यक्त किया था? उनसे अपरिचित, उद्धार के लिए आवश्यक और मात्र एक ही आधार यीशु मसीह की योग्यताएँ हैं। इसलिए, एक अर्थ में, वे नामरहित मसीही विश्वासी थे। उन्हें उनके जीवनकाल में उनके उद्धार के आधार के लिए कभी भी पूर्ण रूप से नहीं बताया जाएगा,परन्तु आइए हम सुनिश्चित हों कि स्वर्ग के नीचे, क्रूस से पहले और इसके पश्चात् और कोई भी नाम नहीं दिया गया है कि कोई उद्धार पाए।

- डॉ. ग्लीन जी. सक्रोजी

पुराने नियम की धर्म विधियाँ ऐसे प्रतीक थे जिन्हें विश्वास के द्वारा परमेश्वर के लोगों ने पूरा किया। परन्तु इन धर्म विधियों की सामर्थ्य पुत्र के द्वारा मध्यस्थता किए हुए कार्य थे। इसलिए ही अब्राहम यीशु के दिनों को देखने के लिए आनन्दित हो उठा, जैसा कि हम यूहन्ना 8:56 में पढ़ते हैं। और इसलिए ही नए नियम के बहुत से चरित्रों ने यह दावा किया कि मूसा और भविष्यद्वक्ताओं ने उस कार्य की व्याख्या की है जिसे करने के लिए यीशु आएगा। अब्राहम ने इस दावे को यीशु के लूका 16:29-31 में दिए हुए लाजर धनी व्यक्ति के दृष्टान्त में किया। फिलिप्पुस ने इस जैसी ही बात को यूहन्ना 1:45 में कहा। पौलुस ने इसे प्रेरितों के काम 26:22 और 28:23 में कहा है। और उसके पुनरूत्थान के पश्चात्, यीशु ने इसे इम्माऊस के मार्ग पर लूका 24:27 में और लूका 24:44 में इकट्ठे हुए शिष्यों के समूह को वर्णित किया है।

अनुग्रह की वाचा के लिए पुत्र की मध्यस्थता यीशु के रूप में उसके देहधारण, उसके जीवन के सिद्ध विश्वास और आज्ञाकारिता, क्रूस के ऊपर उसकी मृत्यु, मृतकों में से उसके पुनरूत्थान और स्वर्ग में उसके स्वर्गारोहण के चारों ओर केन्द्रित है। अनुग्रह की वाचा का मध्यस्थ होने के नाते, वह वाचा के कार्यों को हमारे बदले में पूरा कर देता है, और गारंटी देता है कि हम इसकी आशीषों को प्राप्त करेंगे।

रोमियों 5:12-19 में, पौलुस कार्यों की वाचा में आदम की भूमिका को अनुग्रह की वाचा में पुत्र की भूमिका के साथ तुलना करता है। और उसने ऐसा हमें यह दिखाने के लिए किया है कि कैसे पुत्र की मध्यस्थता के रूप में भूमिका दोनों वाचाओं को पूर्ण करती है। वह वचन 12-14 में वर्णित करते हुए आरम्भ करता है कि आदम के पाप ने पूरी मनुष्य जाति को पाप और मृत्यु के शाप के अधीन कर दिया है। और इस संदर्भ के अन्त में, वह संकेत देता है कि आदम और यीशु दोनों ने सामान्तर भूमिकाओं में वाचा में थामा था। रोमियों 5:14 में वह ऐसे लिखता है:

आदम... उस आनेवाले का चिन्ह है (रोमियों 5:14)।

तब, रोमियों 5:15-19 में, पौलुस यह तर्क देता है कि आदम और यीशु सामान्तर थे परन्तु हमारी वाचा के प्रतिनिधि होने के नाते उनका आपस में विरोधी इतिहास है। आदम का इतिहास पाप, असफलता, दोष या दण्ड और मृत्यु के चारों ओर घुमता रहता है। आदम में, मनुष्य ने केवल हमें उपलब्ध वाचा: दण्ड के परिणामों को ही पाया है। पौलुस के *आदम* के बारे में रोमियों 5:15-19 में दिए हुए शब्दों को सुनिए:

जैसा एक मनुष्य के पाप करने का फल हुआ... एक ही के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ... जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया...वैसे ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।... जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न

मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे (रोमियों 5:15-19)।

आदम में सारी मानवता को दण्डित कर दिया गया क्योंकि कार्यों की वाचा पूरी तरह से न्याय के ऊपर आधारित थी। इसने दया और क्षमा के लिए किसी तरह की कोई क्रियाविधि का प्रबन्ध नहीं किया। इसने एक मध्यस्थ का प्रबन्ध नहीं किया। इसलिए, जब हम एक बार दण्डित होने के लिए ठहरा दिए गए, तो वहाँ कोई भी नहीं था जो हमारे दण्ड को कार्यों की वाचा के भीतर से ही पलट देता।

परन्तु इसी संदर्भ में, पौलुस यह भी व्याख्या करता है कि यीशु ने वहाँ सफलता प्राप्त की जहाँ पर आदम असफल हो गया था। यीशु की धार्मिकता के कार्यों ने हमें लाभ *पहुँचाया* क्योंकि अनुग्रह की वाचा ने दया और क्षमा के लिए एक कार्यविधि का प्रबन्ध नहीं किया था। और वह कार्यविधि यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र की मध्यस्थता है। परिणामस्वरूप, यीशु का इतिहास आज्ञाकारिता, धार्मिकता, जीवन और धर्मीकृत किए जाने के ऊपर केन्द्रित है। अब *यीशु* के बारे में रोमियों 5:15-19 में पौलुस ने क्या कहा उसे सुनिए:

जो दान एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुतेरे लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ।...ऐसा बरदान... अनुग्रह और धर्मरूपी बरदान बहुतायत से [लाया]... वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे... एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ... एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे (रोमियों 5:15-19)।

अनुग्रह की वाचा के अधीन छुटकारा सम्भव है क्योंकि यीशु हमारा मात्र प्रतिनिधि ही नहीं है; अपितु वह हमारा मध्यस्थ भी है। और इसने उसे हमारे व्यक्तिगत, निजी अपराधों के ले लेने के लिए सक्षम बना दिया है। जैसा कि हम इब्रानियों 9:15 में पढ़ते हैं:

और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है - बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें (इब्रानियों 9:15)।

और 1 तीमुथियुस 2:5-6 कहता है:

क्योंकि... परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया (1 तिमुथियुस 2:5-6)।

अनुग्रह की वाचा के मध्यस्थ के रूप में यीशु की भूमिका वास्तव में आश्चर्यचकित करने वाली है। सबसे पहले, मैं यह कहूँगा, कि प्रभु यीशु एक याजक और बलिदान है जो अनुग्रह की वाचा या नई वाचा, यदि आप कहना चाहते हैं तो... को आरम्भ करता है। और अन्तिम भोज के समय, प्रभु यीशु ने सुसमाचारों में वर्णित किया है कि उसकी बलिदानात्मक मृत्यु की दो स्तरों पर विशेषता थी। हाँ, यह एक प्रायश्चित से भरा हुआ बलिदान था जिसमें उसने हमारे स्थान पर हमारे पापों के बदले में पवित्र परमेश्वर के क्रोध को सहन किया ताकि हम बच सकें, परन्तु साथ ही वह अपनी मृत्यु को वाचा-के-द्वारा-आरम्भ किए हुए बलिदान के रूप में वर्णित करता है। उसके लहू ने नई वाचा का आरम्भ किया, वह मत्ती और लूका में इसे बहुत ही स्पष्टता से कहता है। इसलिए, उसकी मृत्यु वह बलिदान है नई वाचा के युग का सूत्रपात करती है। इसलिए, यीशु, एक तरफ तो, ऐसा याजक है जो बलिदान की भेंट चढ़ा रहा है, और इससे भी अधिक आश्चर्यजनक, वह स्वयं बलिदान है।

- डॉ. चार्ल्स एल. क्रुआरल्स्

यीशु का वाचा के मध्यस्थ के रूप में पूर्ण ईश्वरीय और पूर्ण मनुष्य होने की हमारे लिए भूमिका ही है जिसे उसने हमारे पापों के प्रायश्यित के लिए हमारे स्थान पर मरने के लिए सक्षम किया। और क्योंकि मनुष्य के

पाप के लिए यह समाधान सदैव अनुग्रह की वाचा में उपलब्ध रहेगा, इसलिए ईश्वरीय विधान में एक नई वाचा, वाचा के एक और प्रतिनिधि या एक और मध्यस्थ को परिचित करने की आवश्यकता नहीं रह गई।

अभी तक हमने हमारे इस अध्याय में, अनुग्रह की वाचा के ऊपर परमेश्वर की सनातन सम्मति और ईश्वरीय विधान के संदर्भ में ध्यान केन्द्रित किया है। अब आइये हम हमारे तीसरे मुख्य विषय: वाचा के तत्वों की ओर मुड़ें।

तत्व

हमने मानवविज्ञान के ऊपर हमारे धर्मवैज्ञानिक अध्ययन का आरम्भ मनुष्य की उत्पत्ति के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए किया। हमारे विचार विमर्श के एक भाग के रूप में, हमने परमेश्वर की मनुष्य के साथ बाँधी गई मूल वाचा को प्राचीन निकट पूर्व की अधिराज-अधिपति जागीरदार के सन्धियों के संदर्भ में वर्णित किया। इन सन्धियों में: अधिपति का जागीरदार की ओर कृपालु होना, जागीरदार से अधिपति के द्वारा निष्ठा की मांग और वाचा के प्रति जागीरदार की निष्ठा और निष्ठाहीनता के परिणाम सम्मिलित थे। इन तत्वों के होने के कारण, प्राचीन निकट पूर्वी वाचाएँ जातियों के मध्य में बाध्यकारी व्यवस्थाएँ बन गईं।

और ऐसा ही कुछ मनुष्य के साथ परमेश्वर की वाचाओं के साथ भी सत्य था। आदम के साथ बाँधी गई मूल वाचा – कार्यों की वाचा – उसकी ओर परमेश्वर की ईश्वरीय परोपकारिता के ऊपर आधारित थी। उदाहरण के लिए, उसने हमारे प्रथम माता पिता की रचना की, सृष्टि के ऊपर अधिकारी होने के लिए नियुक्त किया, और उन्हें भोजन और रहने को निवास दिया। परमेश्वर ने साथ ही याजकीय और राजकीय कार्यों को पूरे मन से किए जाने के लिए मनुष्य से निष्ठा की मांग की। अन्य बातों के अतिरिक्त, परमेश्वर ने अपेक्षा की कि आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में कार्य करना है, उसके राज्य को पृथ्वी पर भरने के लिए इसका विस्तार कर देना है। और वाचा के परिणामों में महान् जीवन की आशीषें यदि आदम और हव्वा वाचा का आज्ञापालन और इस पर विश्वास करते हैं, और मृत्यु और दण्ड के शाप सम्मिलित थे यदि वे अविश्वास और अनाज्ञाकारिता करते। अनुग्रह की वाचा में कार्यों की वाचा के ये सभी तत्व पाए जाते हैं। परन्तु यह साथ ही मनुष्य के पापी स्वभाव की गणना और मसीह की मध्यस्थता का वर्णन करते हुए अपना विस्तार करती है।

हम इन विस्तारित तत्वों में से प्रत्येक को क्रमानुसार देखेंगे। सर्वप्रथम, हम अनुग्रह की वाचा में ईश्वरीय परोपकारिता के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। दूसरा, हम इसकी ओर से मांग की जाने वाली मानवीय निष्ठा पर चिन्तन करेंगे। और तीसरा, हम इसके परिणामों को सम्बोधित करेंगे। आइए ईश्वरीय परोपकारिता से आरम्भ करें।

ईश्वरीय परोपकारिता

कई तरह से, अनुग्रह की वाचा में परमेश्वर की परोपकारिता बहुत अधिक महत्वपूर्ण गुण रखती है। भलाई और दयालुता ने पिता को अपने पुत्र को हमारा बिचवई बनने के लिए भेज दिया, और पुत्र को आनन्द के साथ इस कार्य को करने के लिए प्रेरित किया। परोपकारिता ने ही एक वाचाई प्रबन्ध को सृजा जिसमें वह स्वयं उन शर्तों को पूरा करेगा जो पूरी नहीं हो सकती हैं, ताकि हमें वह पुरस्कार दिया जाए जिसे हम कमा नहीं सकते हैं। यह है वह बात जो सुसमाचार को शुभ सन्देश के रूप में होने की घोषणा करती है – कि यह क्षमा और जीवन का ऐसा मूल्यहीन वरदान जो मुफ्त में उपलब्ध है। हम एक महान् और प्रेमी परमेश्वर की सेवा करते हैं, जिसने हमारी भलाई के लिए एक गंभीर वाचा की शपथ खाई है।

अनुग्रह की वाचा का पहला भाग परमेश्वर की परोपकारिता है जिसे पवित्रशास्त्र प्रगट करता है। उत्पत्ति 3:14-19 में, जब परमेश्वर ने सबसे पहले कार्यों की वाचा के परिणामों को लागू किया, तो उसने बहुत बड़ी मात्रा में परोपकारिता का प्रदर्शन किया। कार्यों की वाचा कहती है कि आदम और हव्वा, और उसके साथ में सारी मनुष्य जाति, को मात्र उसी समय मृत्यु दण्ड दे दिया जाएगा जब वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाएंगे। परन्तु जब परमेश्वर ने इस न्याय को उन्हें दिया तो उसने उस समय अपने न्याय को दया, भलाई और दयालुता के साथ इसे लचीला बना दिया। पहली परोपकारिता यह थी कि उसने मनुष्य को जीवित ही रहने दिया। उसने उन्हें निरन्तर वृद्धि करने और इस पृथ्वी को भरने दिया। उसने हमें निरन्तर भूमि की खेतीबाड़ी करने, और इससे जीवन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यापन करने के लिए पर्याप्त भोजन उत्पादित करने लिए अनुमति प्रदान की। सबसे महत्वपूर्ण, उसने हमारे लिए एक उद्धारक को भेजने की प्रतिज्ञा की जो कि पाप के शाप को पलट देगा। जैसा कि उत्पत्ति 3:15 में कहा गया है:

> **इस स्त्री [का]... वंश... तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।**

जैसा कि आपको स्मरण होगा, कि इसे कहने के लिए न्याय एक चित्र से भरा हुआ तरीका है, कि अन्ततः एक व्यक्ति शैतान के राज्य के ऊपर विजय को प्राप्त करेगा और हमें पाप के शाप से छुड़ा देगा। मात्र यह प्रबन्ध ही एक अद्भुत परोपकारिता से भरा हुआ वरदान है। परन्तु परमेश्वर ने उसकी परोपकारिता को इससे भी और अधिक बढ़ा दिया है जब यह उद्धारक परमेश्वर पुत्र स्वयं था। यीशु हमारे बदले में क्रूस के ऊपर हमारे पापों को सहन करने के लिए सहमत हो गया। और यहाँ तक कि अपने देहधारण से पहले, वह अनुग्रह की वाचा के मध्यस्थक या "गांरटी" अर्थात् निश्चितता के रूप में सेवा करने के लिए तैयार हो गया। इसके अतिरिक्त, पवित्र आत्मा ने भी अपनी परोपकारिता को तब साझा किया जब वह पापपूर्ण मानवता के मध्य विश्वास लाने के लिए कार्य करने को तैयार हो गया, ताकि हम छुटकारे को प्राप्त कर सकें। पौलुस ने पवित्र आत्मा के इस पहलू की ओर 1 कुरिन्थियों 2:12-14 में बात की है, उसने वहाँ ऐसे लिखा है:

> **हम ने... आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं... परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जाँच आत्मिक रीति से होती है (1 कुरिन्थियों 2:12-14)।**

हम इसी तरह के विचार यूहन्ना 6:63-65 और इफिसियों 2:8, 9 में पाते हैं।

इस में कोई सन्देह नहीं है, कि धर्मवैज्ञानिक परम्पराएँ सदैव इस बात पर सहमत नहीं होतीं कि कैसे आत्मा विश्वास ले आने के लिए कार्य करता है। हम आत्मा के कार्य को मन परिवर्तन के संदर्भ में दो मार्गों या पथों से चित्रण कर सकते हैं। एक मार्ग मसीह को अपना उद्धारकर्ता करके प्रस्तुत करता है। और दूसरा उसे अस्वीकार करने के द्वारा प्रस्तुत करता है। सभी इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी मसीहियों को सहमत होना चाहिए कि पवित्र आत्मा के विधान में लोगों को सुसमाचार का सामना और उसके निर्णय करने का कारण है। परन्तु कम से कम आत्मा के इस कार्य के सम्मिलित होने की इस प्रक्रिया के सम्बन्ध में तीन मुख्य दृष्टिकोण पाए जाते हैं।

सर्वप्रथम, कुछ धर्मवैज्ञानिक परम्पराएँ यह विश्वास करती हैं कि मनुष्य के पास उद्धार के मार्ग या नाश होने के मार्ग को चुनने की स्वाभाविक क्षमता है। इस दृष्टिकोण में, आत्मा के विधान का कार्य सुसमाचार के साथ हमारा सामना करने के लिए हमारे ध्यान को केन्द्रित करता है।

दूसरा दृष्टिकोण सहमत होता है कि पवित्र आत्मा हमारे जीवन को गुप्त तरीके से तैयार करता है ताकि हम सुसमाचार का सामना करें। परन्तु साथ ही यह विश्वास करता है कि पतित मनुष्य के पास सुसमाचार की ओर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए स्वाभाविक क्षमता की कमी है। अपनी पतित परिस्थिति में, हम सदैव नाश के मार्ग को ही चुनते हैं। इसलिए, इस दृष्टिकोण में, पवित्र आत्मा पूर्ववर्ती अनुग्रह, या ऐसा अनुग्रह प्रदान करता है जो बचाने वाले विश्वास से पहले आता है, जो हमें उद्धार के मार्ग को चुनने के लिए सक्षम करता है। इस अनुग्रह को एक बार प्राप्त कर लेने के पश्चात्, दोनों मार्ग हमारे लिए खुले हुए हैं, और हम मसीह को या तो स्वीकार कर सकते हैं या फिर अस्वीकार।

तीसरा मुख्य दृष्टिकोण सहमत होता है कि पवित्र आत्मा सुसमाचार से हमें सामना करने का कारण होता है और यह कि हम में जीवन को चुनने की स्वाभाविक क्षमता की कमी है। परन्तु, इस दृष्टिकोण में, पवित्र आत्मा जिन्हें वह बचाना चाहता है उन्हें *प्रबल* अनुग्रह प्रदान करता है। यह अनुग्रह हमें न केवल उद्धार के मार्ग को ही चुनने के लिये *सक्षम* बनाता है, अपितु यह *सुनिश्चित* करता है कि हम इसे चुनेंगे। परन्तु हम चाहे किसी भी दृष्टिकोण में विश्वास क्यों न करते हों, सभी इवैन्जेलिकलवादियों को सहमत होना चाहिए कि आत्मा का कार्य हमारी ओर भली और दयालुता का कार्य है।

अनुग्रह की वाचा के एक तत्व के रूप में ईश्वरीय परोपकारिता के ऊपर ध्यान दे लेने के पश्चात्, आइए हमें हमारे ध्यान को मानवीय निष्ठा की ओर मोड़ें।

मानवीय निष्ठा

अनुग्रह की वाचा की मांग परमेश्वर के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता है, ठीक वैसे ही जैसे कार्यों की वाचा थी। सच्चाई तो यह है, कि मानवीय निष्ठा की शर्तों की वास्तव में अनुग्रह की वाचा में वृद्धि हुई है। हम इस विचार के ऊपर और अधिक गहराई से देखेंगे जब हम वाचा के प्रशासन के बारे में इस अध्याय में बाद में देखेंगे। इसलिए, अभी के लिए, हम मात्र इस बात की ओर ही संकेत देंगे कि अनुग्रह की वाचा मनुष्य की हार्दिक इच्छा से मानवीय निष्ठा की मांग करती है।

कार्यों की वाचा के अधीन, मानवीय निष्ठा की शर्त को दो बार पूरा किया जाना चाहिए था। सबसे पहले, इसे आदम के द्वारा पूरा किया जाना चाहिए, जो वाचा का हमारा प्रतिनिधि था। यदि आदम परमेश्वर के प्रति पूरी तरह निष्ठावान रहता, तो उसकी आज्ञाकारिता मनुष्य की सामूहिक आज्ञाकारिता के रूप में गिनी जाती। और यद्यपि, आदम इस सम्बन्ध में असफल हो गया, अनुग्रह की वाचा निरन्तर असफलता की इस दुर्गति के लिए उत्तरदायी ठहराती है। हम इसके न्याय से मात्र इसलिए बच नहीं सकते हैं क्योंकि हम अपने अतीत को बदलने में अक्षम हैं।

दूसरा, कार्यों की वाचा हमारी व्यक्तिगत् निष्ठा की मांग भी करती है। उदाहरण के लिए, हव्वा को केवल आदम की जाति होने के कारण दण्डित नहीं किया गया था। उसे उसके स्वयं के कार्यों के लिए भी दण्डित किया गया था। यह संकेत देता है कि परमेश्वर उससे व्यक्तिगत आज्ञाकारिता की मांग कर रहा था। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि परमेश्वर की आज्ञापालन करना आदम के लिए सम्भव होता परन्तु उसके वंश में कोई एक पाप में गिर जाता। इस तरह की घटना में, पाप पूरी मनुष्य जाति के ऊपर दण्ड को न लाया होता, इसने केवल उसी पापी को दण्डित किया होता।

परन्तु अनुग्रह की वाचा में सबसे सुन्दर परोपकारों में से एक यह है कि यीशु हमारी वाचा का प्रधान और मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। हमारे लिए वाचा के प्रधान होने के नाते, उसने पहले से ही सामूहिक मानवीय निष्ठा की मांग को परमेश्वर के प्रति अपनी सिद्ध आज्ञाकारिता के द्वारा पूर्ण कर दिया है। और हमारे मध्यस्थ के रूप में, वह हम में प्रत्येक के स्थान पर खड़ा हुआ और इस तरह से उसने व्यक्तिगत निष्ठा की शर्तों को पूरा कर दिया है। जब कभी भी हमने पाप किया है, उसने इसके दोष को अपने ऊपर ले लिया है। और जब कभी भी वह विश्वासयोग्य रहा है, उसकी यह विश्वासयोग्यता हमारे लेखे में गिनी गई है। इस कारण, यद्यपि अनुग्रह की वाचा में मानवीय निष्ठा की शर्तों में *वृद्धि* हुई है, उन्हें यीशु के कारण – पूरा करना *आसान* हो गया है, जो हमारा मध्यस्थ है, जो हमारे बदले उन्हें पूरा करता है।

मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर के प्रति हमारी निष्ठा के इस विषय के बारे में सोचने के लिए सबसे पहला स्थान इस बात की पहचान करना है कि परमेश्वर के अनुग्रह से अलग जो यीशु मसीह नाम के व्यक्तित्व में प्रदर्शित हुआ यह है कि हमारे पास परमेश्वर के प्रति निष्ठावान बने रहने के लिए क्षमता नहीं है। मैं सोचता हूँ कि सबसे पहला स्थान इस बात को समझने में है कि हमें एक सामर्थ्य या एक अनुग्रह के ऊपर निर्भर होने की आवश्यकता है जो कि हमसे बाहर है...और जो हमें समझने की आवश्यकता है वह यह है कि यदि हम सोचते हैं कि निष्ठा जो कुछ परमेश्वर ने यीशु मसीह में किया है उस से अलग होकर हम में आती है तब तो हम असफल हो जाएंगे यद्यपि हम निष्ठावान होने की बहुत अधिक लालसा कर रहे हैं। इसलिए हम किसी अन्य की निष्ठा को अपने ऊपर ले लेते हैं। हमें इस सच्चाई की ओर देखना चाहिए कि यीशु मसीह एक सिद्ध सेवक था जो व्यवस्था के कट्टरपंथी स्वभाव को मांगों को पूरा करने के लिए आया था, और वह निष्ठा, और वह विश्वासयोग्यता और वह राजभक्ति, और वह आज्ञाकारिता, और वह सेवा अब हम में अध्यारोपित हो जाती है।

- डॉ. स्टीफन ऊम

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

धर्मशास्त्री जॉन वैस्ली, जो 1703 से 1791 तक रहे, ने अपने *सन्देश 6:विश्वास की धार्मिकता* के खण्ड 1, के भाग 8 में इस तरह से मानवीय निष्ठा के लिए परमेश्वर की शर्त का वर्णन किया है। सुनिए उसने वहाँ क्या कहा है:

बड़ी गंभीरता से कहना, अनुग्रह की वाचा हम से किसी भी कार्य को अपनी धार्मिकता के लिए पूरी तरह से और अनिवार्य रूप से अवश्य ही करने की मांग नहीं करती है; अपितु केवल, उसमें जो अपने पुत्र के कारण, और उस प्रायश्चित जिसे उसने किया में विश्वास करने के द्वारा, भक्तिहीनता जो कार्य नहीं करती है उसे धर्मी बनाती है।

यहाँ पर वैस्ली रोमियों 4:5 को प्रमाण के रूप में आग्रह करता है कि केवल एक की बात अनुग्रह की वाचा में पूर्ण रीति से हम से व्यक्तिगत् रूप में मांग करती है वह यह कि मसीह में हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर में पूर्ण विश्वास हो। इस सम्बन्ध में, वैस्ली *वेस्टमिन्स्टर विश्वास के अंगीकार,* अध्याय 7, खण्ड 3 के साथ सहमत होता है, जिसे हमने पहले पढ़ लिया है। सुनिए एक बार फिर से वह क्या कहता है:

परमेश्वर एक दूसरी [वाचा] को बाँधने के लिए प्रसन्न था, जिसे सामान्य रूप से अनुग्रह की वाचा कह कर पुकारा जाता है; जिसके द्वारा वह मुफ्त में पापियों को उसमें विश्वास करने की मांग करते हुए; जीवन और यीशु मसीह के द्वारा उद्धार का प्रस्ताव देता है, ताकि वे बचाए जाएँ।

इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी सहमत हैं कि बचाए जाने के लिए हमें केवल परमेश्वर में बचाए जाने के वाले पूर्ण विश्वास को चाहिए। और यह पूरी तरह से पवित्रशास्त्र की शिक्षा की सहमति में है। मात्र एक उदाहरण के रूप में, पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा को स्मरण करें, जिसका वर्णन प्रेरितों के काम 15:36-18:22 में है। उस यात्रा के मध्य, पौलुस और सीलास को फिलिप्पी के कारागृह में सुसमाचार के प्रचार के कारण डाल दिया गया था। परन्तु मध्य रात्रि के समय लगभग, एक भूईंडोल ने उन्हें उनकी जंजीरों से स्वतंत्र कर दिया। दारोगा ने अनुमान लगाया था कि वे भाग गए और इसलिए वह स्वयं को मारने पर था, जब पौलुस ने उसे ऐसा करने से रोक दिया क्योंकि कैदियों ने वहीं रहना चुना था। दारोगा उसके जीवन की चिन्ता के बारे में उनके इस सोच से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि वह तुरन्त मसीह में परिवर्तित हो जाना चाहता था। सुनिए दारोगा और पौलुस और सीलास के मध्य प्रेरितों के काम 16:30-31 में दिए हुए वार्तालाप को:

और [दारोगा] उन्हें बाहर लाकर कहा, "हे सज्जनों, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूँ?" उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा" (प्रेरितों के काम 16:30-31)।

अनुग्रह की वाचा में मसीह की मध्यस्थता इतनी अधिक प्रभावशाली थी कि यह हमारे लिए परमेश्वर की वाचा की सभी शर्तों को पूरा करती है। यहाँ तक कि हमारा विश्वास भी एक सकारात्मक कार्य के रूप नहीं गिना जाता है जिसे हमने किया है। हमारा विश्वास तो मात्र एक तरीका है जिसे परमेश्वर सामान्य रूप से मसीह की धार्मिकता को हमारे में लगाने के लिए उपयोग करता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने अपनी वाचा की शर्तों को कम कर दिया है। और वह निश्चित ही हमें यह नहीं बताता है कि हम पाप के द्वारा स्वतंत्र कर दिये गए हैं। इसके विपरीत, जैसा कि यीशु ने अपने शिष्यों को यूहन्ना 14:15 में कहा था:

यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे (यूहन्ना 14:15)।

अंग्रेज प्यूरीटॉन पास्टर वॉल्टर मार्शल, जो 1628 से लेकर 1680 तक रहे, ने इस विषय को अपनी पुस्तक *पवित्रीकरण का सुसमाचारीय-रहस्य* में "निर्देशन" या "अध्याय" 8 में इस तरह से सम्बोधित किया है। सुनिए उसने वहाँ पर क्या कहा है:

कार्यों की वाचा के बन्धन से छुटकारा, सचमुच में, हमारे उद्धार का एक भाग है, परन्तु इसका अन्त यह नहीं है, कि हमें पाप (यह तो गुलामी से भी बुरा है) से स्वतंत्रता मिल जाएगी परन्तु हम स्वतंत्रता की राजकीय व्यवस्था को पूर्ण कर सकते हैं...यह किस तरह का उद्धार है जिसकी वह इच्छा रखते हैं, जो पवित्रता की कोई चिन्ता नहीं करता है! वे बचाए जाएंगे और तौभी वे पूर्णतया पाप में मरे हुए, परमेश्वर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

के जीवन से अलग, परमेश्वर के स्वरूप से दुखी, शैतान के स्वरूप से विकृत, उसके दास और अपनी स्वयं की वासनाओं के अधीन, परमेश्वर की महिमा के आनन्द से पूरी तरह से रहित होंगे। इस तरह का उद्धार कभी भी मसीह के लहू के द्वारा नहीं खरीदा गया है।

सदैव ऐसे मसीही विश्वासी रहे हैं जो यह विश्वास करते हैं कि जब तक हम यीशु में विश्वास को व्यक्त करते रहेंगे, हमें परमेश्वर की आज्ञापालन के बारे में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु पवित्रशास्त्र स्पष्ट कर देता है कि सच्चे विश्वासियों को अभी भी परमेश्वर के प्रति प्रेम, निष्ठा को प्रदर्शित करने की आवश्यता है। हम इसे आंशिक रूप से यीशु में निरन्तर विश्वास करने, और आंशिक रूप से परमेश्वर की वाचा की व्यवस्था का पालन करने के द्वारा करते हैं। हम इसे याकूब 2:22-25 और प्रकाशितवाक्य 14:12 जैसे स्थानों में देखते हैं।

अब, यह सत्य है कि यदि हम वास्तव में सुसमाचार में विश्वास करते हैं, तो हम बचाए जाने में असफल नहीं हो सकते हैं। यीशु का बलिदान सुनिश्चित करता है कि हम कभी भी परमेश्वर के शाप से नीचे नहीं गिरेंगे। और उसकी सिद्ध निष्ठा सुनिश्चित करती है कि हम अनुग्रहकारी वरदानों के रूप में वाचा की कई आशीषों – जैसे क्षमा और अनन्तकाल के जीवन को प्राप्त करेंगे। परन्तु इस और आने वाले संसार के लिए हमारे व्यवहारों के लिए वाचाई परिणाम होंगे। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 12:5-11 यह शिक्षा देता है कि इस संसार में जब हम पाप करते हैं तब परमेश्वर हमें प्रेम से भर कर अनुशासित करता है। इसके अतिरिक्त – यद्यपि इस संसार में यह सिद्ध नहीं है – परन्तु आने वाले संसार में यह परमेश्वर की ओर से पुरस्कार को प्राप्त करता है। हम इसे मत्ती 6:20; मरकुस 10:21; और लूका 12:33, 34 में देखते हैं।

इसलिए, जब हम अनुग्रह की वाचा में मानवीय निष्ठा के बारे में सोचते हैं, तो स्मरण रखने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि यीशु ने हमारे श्राप को पूरी तरह से अपने ऊपर ले लिया। जब तक हम उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहते हैं, हम कभी भी परमेश्वर की वाचा के नकारात्मक परिणामों की पीड़ा को सनातनकाल के लिए नहीं सहन करेंगे। परन्तु हम अभी पाप नहीं करने के लिए बाध्य नहीं है। इसी तरह से, हमारी बहुत सी आशीषें मसीह के द्वारा खरीद ली गई हैं, और यह हमारी व्यक्तिगत निष्ठा के ऊपर निर्भर नहीं है। परन्तु फिर भी, वाचा हमें अभी उसकी आज्ञापालन करने के लिए बाध्य करती है।

हम मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए गए हैं – इसके अलावा बचने का और कोई मार्ग नहीं है। हो सकता है कि कुछ लोग यह कहें, "तब उसकी आज्ञा पालन करने के क्या उद्देश्य हैं? प्रेम करने का क्या उद्देश्य है?" मैं सोचता हूँ वास्तव में यह उद्देश्य आगे वाले कुछ वचनों से निकल कर आता है। कोई सन्देह नहीं है, कि यह सब कुछ इफिसियों 2 में से निकल कर आता है, जहाँ पर वह कहता है कि, "ठीक है, क्योंकि हम उसके बनाए हुए है, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए।" इस कारण, यदि हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए गए हैं – मैं सोचता हूँ कि इसके बारे में आप पता लगाते रह सकते हैं – हम भले कामों को करने जा रहे हैं। अब, यह प्रश्न सामने आता है, कि यदि हम भले कार्यों को *नहीं* कर रहे हैं ,तो हम कौन हैं? मैं सोचता हूँ कि यह एक अच्छा प्रश्न है: क्या हम मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए गए हैं?

- डॉ. मॉट फ्राईडमैन

अब क्योंकि हमने ईश्वरीय परोपकारिता और मानवीय निष्ठा के तत्वों को देख लिया है, इसलिए आइए हम अनुग्रह की वाचा के परिणामों को सम्बोधित करें।

परिणाम

वैधानिक दृष्टिकोण से, अनुग्रह की वाचा में कार्यों की वाचा के सभी परिणाम सम्मिलित हैं और यह इसका विस्तार करती है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 5:12-14 में शिक्षा दी है, मृत्यु अभी भी आदम के पाप का सामूहिक परिणाम है, ठीक वैसे ही जैसे कार्यों की वाचा में था। और हम अभी भी हमारे व्यक्तिगत पापों से दुख उठाते हैं, ठीक

वैसे ही जैसे उत्पत्ति 3:16-18 में आदम और हव्वा ने किया था। इसके अतिरिक्त, वाचा के शाप अब और अधिक बढ़ गए हैं क्योंकि अब मसीह आ चुका है। जैसा कि हम इब्रानियों 10:28-30 में पढ़ते हैं:

> **जब कि मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला, दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है, तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा, और वाचा के लहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिस ने कहा, "पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूँगा।" और फिर यह, कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा? (इब्रानियों 10:28-30)।**

ठीक इसी तरह से, कार्यों की वाचा की आशीषें अनुग्रह की वाचा में सम्मिलित की गईं और इनका विस्तार किया गया है। कार्यों की वाचा में, आदम और मनुष्य ने इस पृथ्वी पर सनातनकाल के जीवन को प्राप्त किया होता, यदि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया होता। सच्चाई तो यह है, कि उनका अदन की वाटिका से निकाल दिया जाना उन्हें जीवन के वृक्ष से दूर रखते हुए यह सुनिश्चित रखने के लिए निर्धारित किया गया था कि वे सनातनकाल तक के लिए जीवित *नहीं* रह सकेंगे। और अनुग्रह की वाचा इस आशीष को सनातन काल के लिए सांसारिक और आत्मिक जीवन के ढांचे में बहाल हुई है। यह प्रतिज्ञा करती है कि अन्तत: हम इसी पृथ्वी के स्वर्गलोक में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में रहेंगे। हम यहाँ तक कि जीवन के वृक्ष तक पहुँच पाएंगे, ठीक वैसे ही जैसे यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 21:1-22:5 में पहले ही देख लिया था।

परन्तु इसके अतिरिक्त, अनुग्रह की वाचा के अधीन हमारा छुटकारा हमारी आशीषों में वृद्धि लाता है जो उन आशीषों से बहुत परे हैं जिन्हें कार्यों की वाचा में प्रस्तावित किया गया है। उदाहरण के लिए, छुटकारे की हमारी अन्तिम अवस्था में, पाप की सम्भावना और इसके परिणाम पूरी तरह से दूर कर दिये जाएंगे।

पिछले अध्याय में, हमने हिप्पो के बिशप अगस्तीन की शिक्षा को उद्धृत किया था, जो ईसा पूर्व 354 से लेकर 430 तक रहे। वह मनुष्य की मूल, निष्पाप दशा को *पौसी नॉन पिक्कारे* के रूप में वर्णित करते हैं, जिसका अर्थ मनुष्य की पाप न करने की क्षमता से है। परन्तु कार्यों की वाचा के अधीन, उनके पास पाप करने की क्षमता या *पौसी पिक्कारे* भी थी। अगस्तीन ने यह शिक्षा दी, मसीह में हमारे छुटकारे के द्वारा, हम अन्तत: *पौसी नॉन पिक्कारे* की अवस्था, जो कि लेटिन में पाप करने की क्षमता के लिए उपयोग होता है, तक पहुँच जाएंगे। यह अवस्था उस अवस्था से बहुत अधिक उत्तम होगी जो कार्यों की वाचा के अधीन है, क्योंकि यह हमारे लिए सदैव के लिए परमेश्वर की आशीषों को सुरक्षित कर लेगी।

इसके अतिरिक्त, अनुग्रह की वाचा के अधीन, हमारी आशीषें अब मसीह के साथ एकता को सम्मिलित करती है। पौलुस इस विचार के साथ इतना ज्यादा कार्यरत् था कि वह निरन्तर अपने अभिलेखों में इसका उपयोग करता है। ऐसे वाक्यांश जैसे "मसीह में," "मसीह यीशु में," "प्रभु में," और "उस में" उसके लेखों में सौ से भी ज्यादा बार प्रगट होते हैं। मसीह में इस एकता को कुछ धर्मशास्त्री वाचा के प्रस्तुतिकरण का विषय समझते हैं। अन्य इसे आत्मिक एकता के संदर्भ में समझते हैं। और कई और विश्वास करते हैं कि इसमें दोनों ही सम्मिलित हैं ।परन्तु इन सभी घटनाओं में, हमारे मध्यस्थ यीशु मसीह के साथ हमारी एकता एक व्यक्तिगत् सम्बन्ध को निर्मित करती है जो हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू को उत्तमता के लिए परिवर्तित कर देता है। और इसकी आशीषें किसी भी बात से बहुत आगे बढ़कर हैं जिन्हें हमने कार्यों की वाचा से प्राप्त करते। कुल मिलाकर, अब क्योंकि हमने उन आशीषों को प्राप्त कर लिया है जिन्हें स्वयं मसीह परमेश्वर के सिद्ध पुत्र और उसके राज्य के ऊपर राजा होने के नाते से कमा लिया है, इन आशीषों की अपेक्षा जिन्हें हम स्वयं से कमा सकते थे।

और इसमें कोई सन्देह नहीं है, हम उन आशीषों को भूल नहीं सकते हैं यदि हमारे पास यीशु में विश्वास है, वह हमारे स्थान पर वाचा के शापों को उठाता है। जब हम पाप करते हैं, हम अभी भी परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन करते हैं और इसके नकारात्मक परिणामों को कमाते हैं। परन्तु *हमें* दण्ड देने की अपेक्षा, परमेश्वर ने हमारे दण्ड को *यीशु* के ऊपर ठहरा दिया है। और यीशु ने इसे पहले से ही क्रूस के ऊपर निपटा दिया है। इसलिए,

विश्वासियों के लिए, अनुग्रह की वाचा को कोई शाप नहीं है; इस के पास केवल आशीषें ही हैं! क्योंकि इस सच्चाई के कारण, पुराने धर्मशास्त्री कई बार आदम के पाप को "भाग्यशाली" या "प्रसन्नता" से भरी हुई घटना के रूप में उद्धृत करते हैं। निश्चित ही उसका पाप बुरा था, और परमेश्वर ने सही ही उसे दण्डित किया। परन्तु अनुग्रह की वाचा में छुटकारा मनुष्य की मूल अवस्था से कहीं अधिक उत्तम है जिसका कारण यह है कि आदम के द्वारा पाप किया जाना वास्तव में उत्तम ही रहा।

मध्ययुगीन दर्शन पद्धति धर्मशास्त्री थॉमस एक्विनास, जो लगभग 1225 में जन्मा और 1274 में जिनकी मृत्यु हुई, इस सच्चाई को अपनी पुस्तक *सुम्मा थियोलोजिका* के भाग 3, प्रश्न 1, के लेख 3 में, आपत्ति 3 का उत्तर देते हैं। सुनिए वह कैसे इसे लिखते हैं:

> **ऐसा कोई भी कारण नहीं होना चाहिए कि क्यों मानवीय स्वभाव को पाप के पश्चात् कुछ अधिक उत्तमता में उठाया न जाए। क्योंकि परमेश्वर बुराई को इसलिए घटित होने देता है कि वह इससे सर्वोत्म भलाई को बाहर निकाल लाए; इसलिए यह लिखा हुआ है, जहाँ पाप बहुत अधिक बढ़ा, अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक बढ़ा।" इसलिए, हम...भी कहते हैं: "हे मेरे प्राण, एक उद्धारक के गुण और उसकी महानता के कारण प्रसन्न हो!"**

अनुग्रह की वाचा परमेश्वर के साथ उसके लोगों में कई अद्भुत तत्वों को जोड़ती चली जाती है क्योंकि इसकी आशीषों कोई सीमा नहीं है। परमेश्वर की परोपकारिता उसके छुटकारे के प्रस्ताव और हमारे मध्यस्थ के रूप में उसके पुत्र की नियुक्ति में बहुत अधिक तेजी से वृद्धि करती है। वाचा के लिए मानवीय निष्ठा की शर्त हमारे बदले में हमारे मध्यस्थ के द्वारा पूरी की गई है, और हम पवित्र आत्मा से हमारे विश्वास, आज्ञाकारिता और पवित्रता में सामर्थ्य को प्राप्त करते हैं। क्योंकि वे जो विश्वास करते हैं, उनके ऊपर से वाचा के शाप पूरी तरह से मिट जाते हैं, जबकि वाचा की आशीषें यीशु में हमारी मीरास में साझा होने के कारण महिमा पाती हैं। आदम के द्वारा कार्यों की वाचा में असफलता ने आदम को परमेश्वर के सामने एक भयावह की अवस्था में रख दिया था। परन्तु वह छुटकारा जिसे हमने अनुग्रह की वाचा के द्वारा प्राप्त किया है हमें इसके लिए योग्य बनाने के लिए सर्वोत्तम है।

अभी तक, हमने अनुग्रह की वाचा को परमेश्वर की सनातन सम्मति के सम्बन्धों, ईश्वरीय विधान में इसकी उत्पत्ति होने के, और इसके तत्वों के संदर्भों में देखा। अब आइए हम हमारे अन्तिम मुख्य विषय: इसके ऐतिहासिक प्रशासन की ओर मुड़ें।

प्रशासन

अनुग्रह की वाचा को भिन्न वाचा के प्रतिनिधियों के द्वारा संचालित या प्रशासित किया गया। जब हम अनुग्रह की वाचा के ऐतिहासिक प्रशासन के ऊपर ध्यान देते हैं, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि भिन्न धर्मवैज्ञानिक परम्पराएँ इन प्रशासनों को भिन्न तरीकों से परिभाषित करते हैं। और अक्सर, ये भिन्नताएँ इस बात के चारों ओर घुमती हैं कि वे कैसे परमेश्वर की वाचा के लोगों को परिभाषित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ विश्वास करते हैं कि केवल विश्वासी ही अनुग्रह की वाचा में सम्मिलित हैं। कुछ अन्य विश्वास करते हैं कि इसमें विश्वासी और उनकी सन्तान सम्मिलित हैं। कई अन्य इस विषय को भिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं। वे वाचा वाचा के संचयी क्रम का विवरण करते हैं जो सारी मानवजाति के आरम्भ को सम्मिलित करती है और आगे वाली वाचा के साथ और अधिक पूर्ण होती जाती है। और इसी के साथ अन्य दृष्टिकोण भी हैं।

> **जब हम परमेश्वर के राज्य के बारे में पवित्रशास्त्र के मापदण्ड और छुटकारे के इतिहास में देखते हैं...तो जब आप बाइबल आधारित वाचाओं के ऊपर कार्य करते और उनके सारांश के लिए मसीह तक पहुँचते हैं तो आप उनके प्रशासन में परिवर्तन को पाते है। इसलिए, उदाहरण के लिए, विशेषकर पुराने नियम में, जब परमेश्वर उसकी उद्धार की योजना को पुरानी वाचा में इस्राएल के पूरी जाति के द्वारा लाता है, तो वह मूल रूप से एक जाति के साथ कार्य कर रहा है, वह मूल रूप से ईशतंत्र के संदर्भों में कार्य कर रहा है, जो कि उस जाति के संदर्भ में एक दृश्य प्रस्तुतिकरण है, जहाँ वह उनके द्वारा, मसीह के आगमन को, प्रभु यीशु के आगमन को लेकर आएगा, और आप इस राज्य के अधिकांश प्रशासन को एक विशेष स्थान, जगह,**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विशेष नियम और सरकार और ऐसी ही अन्य बातों के अधीन बँधा हुआ पाते हैं। और तब, जब आप इनकी पूर्णताओं को मसीह में होना सोचते हैं, जब आप राज्य को नई वाचा में आते हुए देखते हैं, तो वहाँ पर कुछ परिवर्तन हैं। स्पष्टत: मसीह राजा है। वह ऐसा जो पुराने नियम की छाया और प्रतीक को पूरा करता है। वह दाऊद और मूसा की भूमिका को पूरा करता है। और वह ऐसा हो जो, अपने जीवन और मृत्यु और पुनरूत्थान में, राज्य का उदघाटन करता, परमेश्वर के बचाने वाले राज्य को इस संसार में और फिर एक विश्वव्यापी समाज में लेकर आता है – जिसे हम कलीसिया के नाम से पुकारते हैं, जो कि एक नया मनुष्य है, जिसमें यहूदी और गैर यहूदी दोनों एकत्र हैं – इस तरह से वह अब कलीसिया में और इसके द्वारा शासन करता। यद्यपि वह पुन: स्वर्ग में आरोहित हो गया, वह कलीसिया में और इसके द्वारा राज्य करता है, परन्तु एक तरह से ईशतंत्र के जैसे नहीं, जैसे इस्राएल के साथ था...और इसलिए उनमें से ऐसे कुछ परिवर्तन हैं जो उस समय के साथ आए हैं जब पुराने नियम में इस्राएल की जाति में परमेश्वर का शासन स्थापित होते हुए, अब मसीह में से होते हुए उसकी कलीसिया में संचयी हुआ है अब कलीसिया जब राज्य के सुसमाचार को संसार के अन्तिम छोर तक यह घोषणा करती हुई ले जाती है, "राजा आ पहुँचा है! उसके उस बचाने वाले शासन में प्रवेश करें इससे पहले कि वह पुन: वापस आए और उद्धार को अन्तिम रूप दे और अपने न्याय को संचालित करे।"

- डॉ. स्टीफन जे. वेलऊम

इस अध्याय में अपने प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए, हम हमारे ध्यान को वाचा के ऐतिहासिक प्रशासन के उन क्षेत्रों के ऊपर करेंगे जिनसे इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी सामान्यत: सहमत हैं। विशेषकर, हम परमेश्वर की वाचा के विकास को इसके प्रमुख प्रतिनिधियों या प्रधानों जैसे – आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद और यीशु को देखेंगे। हम उस तरीके को देखेंगे जिसमें ऐतिहासिक विकास ने मनुष्य के लिए परमेश्वर की पूर्णता की ओर संकेत दिया।

आदम

जैसा कि हमने पहले ही देख लिया है, अनुग्रह की वाचा उत्पत्ति 3:15 में आदम के साथ उसके पाप में गिरने के तुरन्त बाद बाँधी गई थी। क्योंकि उस समय आदम वाचा का प्रधान था, इसलिए धर्मशास्त्री इसे अक्सर वाचा के लिए "आदम के प्रशासन" के होने का संकेत देते हैं। इस प्रशासन ने मनुष्य को परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को तुरन्त मेल-मिलाप में आने के लिए अवसर प्रदान किया। इस मेल-मिलाप के द्वारा, हम एक बार फिर से पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य के निर्माण को करने के लिए ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं। यह लक्ष्य न केवल हमें नाश होने के लिए परमेश्वर के इन्कार किए जाने, अपितु इसके पश्चात् उत्पत्ति 4:25-5:32 में आदम की विश्वासयोग्य सन्तानों के आगे आने वाले वृतान्त में स्पष्ट मिलता है। सुनिए कैसे उत्पत्ति 4:25-26 का संदर्भ आरम्भ होता है:

[आदम अपनी पत्नी] के पास फिर गया; और उस ने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम... शेत रखा... शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उस ने उसका नाम एनोश रखा, उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे (उत्पत्ति 4:25-26)।

मनुष्य "उस समय से यहोवा से प्रार्थना करने लगे" यह दिखाती है कि वे उसके प्रति वाचा के अपने दायित्वों को पूर्ण करने के लिए कायल हो चुके थे। और वंशावली जो आगे आती है यह प्रदर्शित करती है कि वे अपने दायित्वों को परमेश्वर के स्वरूप और समानता के रूप में इस पृथ्वी पर वृद्धि करने के द्वारा भरने लगे थे। सच्चाई तो यह है कि यह शब्द "स्वरूप" और "समानता" उत्पत्ति 5:1, 3 में उपयोग किये गए हैं।

नूह

आदम के पश्चात्, वाचा को जल प्रलय के पश्चात् नूह के साथ बाँधा गया। नूह के प्रशासन का उल्लेख उत्पत्ति 6:18 और 8:21-9:17 में मिलता है। जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा, यह प्रशासन स्पष्ट तौर पर आदम के प्रशासन की सारी शर्तों को अपने में सम्मिलित करता है। आपको स्मरण होगा, कि उत्पत्ति 6:18 में, परमेश्वर ने नूह से कहा था:

परन्तु तेरे संग मै वाचा बान्धता हूँ (उत्पत्ति 6:18)।

यहाँ पर, शब्द बान्धना इब्रानी क्रिया *कुम* का भाषान्तरण है। यह एक पहले से *विद्यमान* वाचा की पुष्टि करने के लिए दिया गया शब्द है।

नूह के प्रशासन ने भी वाचा की आशीषों को एक बार फिर से परमेश्वर जल प्रलय से पृथ्वी को नाश नहीं करेगा, की प्रतिज्ञा को जोड़ते हुए विस्तारित किया। यहाँ तक कि परमेश्वर ने इस वाचा के निशान के लिए मेघ धनुष का भी प्रबन्ध किया। इस तरीके से, उसने यह सुनिश्चित कर दिया कि इस पृथ्वी पर जीवन सदैव के लिए बना रहेगा, इस कारण उसके विश्वासयोग्य लोग उसकी वाचा की आशीषों का अनुसरण कर सकते हैं। साथ ही परमेश्वर ने मनुष्य के लिए उसके राज्य के प्रयोजनों को नूह और उसके परिवार को वही आदेश देते हुए पुन: पुष्टि की जिसे उसने आदम और हव्वा को दिया था। उत्पत्ति 9:1 में, उसने उनसे कहा:

फूलो – फलो और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ (उत्पत्ति 9:1)।

अब्राहम

नूह के पश्चात्, अब्राहम परमेश्वर की वाचा के लोगों के लिए अगला प्रमुख प्रतिनिधि था। अब्राहम की वाचा के प्रशासन का उल्लेख उत्पत्ति 15:1-21 और 17:1-21 में मिलता है। अब्राहम की अधीनता में, वाचा में नूह की वाचा के प्रशासन की शर्तों को भी सम्मिलित कर दिया गया। और इसमें ऐसी बातों को सम्मिलित किया गया जैसे अब्राहम की सन्तान एक बहुत सामर्थी जाति में परिवर्तित हो जाएगी और उसके द्वारा बाकी की सारी जातियाँ आशीष को पाएंगी। वाचा के इस प्रशासन के समय, परमेश्वर ने प्रगट किया कि वह अपने प्रयोजन को मनुष्य के लिए अब्राहम की सन्तान – विशेषकर इस्राएली जाति के द्वारा पूरा करेगा। विशेष रूप से, उन्हें इस पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने के लिए अधिकार दिया जाएगा। जैसा कि पौलुस रोमियों 4:13 में लिखता है:

क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को, न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी (रोमियों 4:13)।

पौलुस के यह शब्द कि प्रतिज्ञा या अब्राहम की मीरास वास्तव में पूरे संसार को अपने अधीन लेती जा रही है, मैं नहीं सोचता, कि कुछ नई है। वह कोई नई व्याख्या को प्रस्तुत नहीं कर रहा है। वह कहानी को आगे बढ़ा रहा है जिसे अब्राहम ने आरम्भ किया था। और छुटकारे की वाचा का कार्य जिसे परमेश्वर अब्राहम के साथ आरम्भ करता है, अपने में वास्तविक रूप से सारे कार्यक्रम को सारांशित कर लेता है। और मैं सोचता हूँ कि आप इसे एक तरह से उत्पत्ति 12 में बीज-के-आकार में पहले तीन वचनों में पाते हैं। और आप देखते हैं कि स्वयं अब्राहम के साथ विशेष तरह की प्रतिज्ञाएँ की गई हैं: वह एक बहुत बड़ी जाति होगा; उसका बीज यह जाति बन जाएगा; उसका नाम महान् होगा। और तब अन्त में वचन 3 में यह पूरे संसार तक विस्तारित हो जाता है: "भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।" और इस तरह से, हम देखते हैं कि अब्राहम एक तरह से पूरे कार्यक्रम के लिए एक मंच को स्थापित कर रहा है जो किसी एक समय पर पूरे संसार में विस्तारित हो जाएगा। और इसलिए, पौलुस, परमेश्वर के नए कार्य के साथ आरम्भ करते हुए कलीसिया में आत्मा के उण्डेले जाने के द्वारा, हम एक नए चरण या इस छुटकारे की योजना के नए टुकड़े की पूर्णता को देखते हैं।

- डॉ. मार्क साऊसी

मूसा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब्राहम के पश्चात् वाचा के प्रतिनिधि के रूप में अगला प्रमुख मूसा था। मूसा के प्रशासन की शर्तें निर्गमन 19-24 जैसे स्थानों में सारांशित किए गए हैं, और लैव्यव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों में विस्तृत विस्तार के साथ वर्णित किए गए हैं।

मूसा के साथ, परमेश्वर ने अब्राहम के प्रशासन के ऊपर निर्मित करते हुए, अब्राहम के साथ बाँधी हुई अपनी प्रतिज्ञाओं की पुष्टि व्यवस्थाविवरण 4:31 और 7:8-13 जैसे स्थानों में की है। उसने साथ ही इस्राएल की जाति के लिए ढांचे को, और उन्हें व्यवस्था का पहला बड़े पैमाने पर संहिताबद्ध संस्करण प्रदान किया। और इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि उसने उन्हें उसके राज्य के निर्माण के कार्य को इस पूरे संसार में करने के लिए पुन: निर्देशित किया। जैसा कि मूसा व्यवस्थाविवरण 28:1 में लोगों से कहता है:

यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएँ, जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ, चौकसी से पूरी करने का चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा (व्यवस्थाविवरण 28:1)।

मूसा के दिनों में, पृथ्वी का अधिकांश भाग परमेश्वर के मानवीय स्वरूपों से भर गया था। परन्तु यह अभी भी परमेश्वर के राज्य के रूप में उसकी सेवा करने के लिए तैयार नहीं था क्योंकि मनुष्य पूरी तरह से विद्रोह में डूबा हुआ था। इस कारण, मूसा की वाचा के प्रशासन की अधीनता में, इस्राएल को परमेश्वर की सच्चाई के सन्देश के द्वारा सभी जातियों में छुटकारे को लाना था। और यदि वह सफल होते हैं, तो परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग उसके बदले में संसार के ऊपर शासन करेंगे।

दाऊद

मूसा के पश्चात्, वाचा के विकास का अगला मुख्य कदम दाऊद के साथ प्रगट होता है। दाऊद के प्रशासन का विवरण 2 शमूएल 7 और भजन संहिता 89, 132 में मिलता है। दाऊद के दिनों में, परमेश्वर ने मूसा के प्रशासन की पुष्टि की। परन्तु उसने साथ ही यह प्रकाशित किया कि वाचा की सबसे महान् आशीषें दाऊद और उसके राजवंशीय उत्तराधिकारी के राज्य की अधीनता में पूर्ण होंगी। जैसा कि हम भजन संहिता 89:3-4 में पढ़ते हैं:

मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बान्धी है, मैं ने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है, "कि मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूँगा; और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी तक बनाए रखूँगा" (भजन संहिता 89:3-4)।

यीशु

दाऊद के पश्चात्, वाचा का अगला और अन्तिम प्रतिनिधि – यीशु – था और अभी भी है। वाचा के पहले प्रशासनों के विपरीत, जो उनके प्रतिनिधियों के नाम से पुकारे जाते हैं, यीशु के प्रशासन को विशेष रूप से "नई वाचा" के रूप में उद्धृत किया जाता है। यह नाम मूल रूप से यिर्मयाह 31:31 में से आता है, जिसे इब्रानियों 8:8 में पुन उद्धृत किया गया है। यिर्मयाह ने शिक्षा दी थी कि परमेश्वर अन्तत: एक स्थाई, न टूटने वाली वाचा को स्थापित करेगा जिसमें उसके लोग उसकी वाचा की सभी आशीषों को प्राप्त करेंगे। और जिस रात यीशु को कैद किया गया, अन्तिम भोज के मध्य में, स्वयं प्रभु ने कहा कि उसका क्रूसीकरण इस नई वाचा की पुष्टि करेगा। लूका 22:20 में उसके शिष्यों को कहे गए यीशु के शब्दों का वर्णित किया गया है:

यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है (लूका 22:20)।

वाक्यांश "नई वाचा" में "नई" के लिए इब्रानी और यूनानी शब्द – इब्रानी में *चाडाश* और यूनानी में *काईनोस* है – जिसे "नवीकृत" भी भाषान्तरित किया जा सकता है। और "नवीकृत" निश्चित ही ऐसा इच्छित अर्थ है जब पवित्रशास्त्र अनुग्रह की वाचा के प्रशासन के लिए नई वाचा के बारे में बात करता है। विचार यह है कि परमेश्वर अपनी वाचा को उसके लोगों के लिए वाचा के नए ताजे प्रशासन के साथ नवीकृत या पुन: पुष्टि कर रहा है, ऐसा नहीं है कि वह उस वाचा को त्याग रहा है जिसे उसने बनाए रखने के लिए शपथ खाई थी।

इस वाचा के प्रशासन का यह नवीकृत स्वभाव संपूर्ण इब्रानियों की पुस्तक में स्पष्ट दिखाई देता है, जो अनुग्रह की वाचा के मूसा के पुराने प्रशासन को मसीह की अधीनता में नए और अन्तिम प्रशासन का विरोधाभास

है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 5-7 यीशु के नए याजकपन – एक ऐसा याजकपन जो पुराने नियम की परम्परा याजक-राजा मलिकिसिदक के साथ प्राचीन लेवीयों के याजकपन का विरोधाभास प्रगट करते हैं। इब्रानियों 8 यिर्मयाह 31 को उद्धृत करते हुए दिखाते हैं कि नई वाचा पुरानी वाचा से कहीं अधिक सर्वोत्तम होगी। और यिर्मयाह 32 का संदर्भ मूसा की वाचा के प्रशासन की आशीषों के नवीकरण और बहाली की मूल भविष्यद्वाणी को स्पष्ट कर देता है।

इब्रानियों 8 में, लेखक अन्त में शब्द "वाचा" को परिचित कराता है, ऐसी वाचा जिसे प्रभु यीशु के बलिदान के द्वारा सुनिश्चित किया गया है। ध्यान दें कि इसमें क्या है को बताता है कि यीशु ने एक बहुत बड़ी सेवा को किया था, क्योंकि वह अब एक सर्वोत्तम वाचा का मध्यस्थ है, जिसका अर्थ है कि वाचा स्वयं में ही सर्वोत्तम है। इसे पहली वाचा के रूक जाने से समझा जा सकता है, और इसलिए पूर्ण रूप से एक नई वाचा के रूप में समझा जाना चाहिए। परन्तु अन्य इसके निरन्तर चलते रहने में विश्वास करते हैं, कि यह पुराने नियम की वाचा की पूर्णता है। लेखक अध्याय 8 और बाद के अध्यायों में वाचा के बारे में बात करता है जिसे भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने अध्याय 31 में उल्लेख किया है। वह कहता है कि ऐसा समय आएगा जब प्रभु एक नई वाचा को स्थापित करेगा। मैं इसे स्पष्ट कर दूँ, कि यिर्मयाह के लिए, नई वाचा भविष्य में घटित होने वाली एक घटना थी। इसलिए हम यहाँ पर एक तुलना को देखने वाले हैं: क्या यह निरन्तर चलते रहने वाली है या पूरी तरह नई है? इसे लेकर दुविधा बनी हुई है। मसीही विश्वासी होने के नाते, हम इस विषय के ऊपर भिन्न तरह से सोचते हैं। मेरा व्यक्तिगत् विचार यह है कि नई वाचा पुरानी की निरन्तरता है, क्योंकि मैं इसे देख सकता हूँ, कि प्रभु ने सदैव उसके लोगों – उसके यहूदी लोगों में और बाद में उसके अन्यजाति लोगों में – मानवजाति के अभी तक के पूरे इतिहास में कार्य किया है। उद्धार सदैव अनुग्रह के द्वारा दिया गया है। भिन्नता यह है, कि पुराने नियम में, यीशु ने अपना बलिदान नहीं किया तौभी, पुराने नियम के लोग उसकी ओर वैसे नहीं देख सकते जैसे हम देखते हैं। हमारे पास अब एक सर्वोत्तम वाचा है क्योंकि उद्धार पहले से ही स्थापित कर दिया गया है, और हमें असफल होने से डरना नहीं चाहिए, क्योंकि यीशु ने पहले से ही हमारे प्रत्येक पाप के लिए क्षमा को प्राप्त कर लिया है। इसलिए, वाचा सर्वोत्तम *है* अपितु यह इस अर्थ में नई है कि अब व्यवस्था के द्वारा किसी तरह की कोई बाधा या शर्त को नहीं लगाया गया है। हमें उसी तरह के बलिदानों की आवश्यकता नहीं है; हमें भोजन के बारे में उसी तरह की व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है; हमें उसी तरह के समारोहों की आवश्यकता नहीं है, इत्यादि। अब *सब कुछ* विश्वास के द्वारा, यीशु में भरोसा करने से है। इसलिए अध्याय 8 के अन्त में, लेखक कहता है कि नई वाचा ने पिछली वाचा को पुराना बना दिया है और जो पुरानी और जीर्ण हो गई उसका मिट जाना अनिवार्य है। इसलिए, पुरानी वाचा खत्म हो गई और इसकी निरन्तरता नई वाचा है।

- डॉ. आल्विन पॉडिला, अनुवादित

नई वाचा का नवीकृत स्वभाव भी इब्रानियों 9:15 में प्रगट है, जहाँ पर लेखक कहता है:

और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें (इब्रानियों 9:15)।

जैसा कि यह वचन इंगित करता है, "नई" वाचा का प्रशासन "पहले" या "अन्तिम" प्रशासन के साथ निरन्तरता को बनाए रखते हैं। विशेष रूप से, नया प्रशासन पाप के पुराने कर्जे को अदा करता और मीरास की पुरानी प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करता है। और यह इस इसके मध्यस्थ के द्वारा पूर्ण करता है।

नई वाचा जो महान् विस्तार को प्रस्तुत किया गया वह यह है कि मध्यस्थ अन्त में उसके लोगों की ओर से वाचा की शर्तों को पूरा करता है। उदाहरण के लिए, वह लूका 2:21 में अब्राहम की वाचा के खतने को पूरा करता है। उसने मूसा की व्यवस्था की पुष्टि की और इसे बनाए रखा, जैसा कि हम मत्ती 5:17-19, लूका 24:44 और

रोमियों 8:4 में पढ़ते हैं। और उसने दाऊद के पद मसीह को मीरास में पाया, जैसा कि मत्ती 1:1-25 में प्रदर्शित किया गया है।

इसके अतिरिक्त, वाचा की इन सभी शर्तों को पूरा करने के द्वारा, यीशु ने इससे सम्बन्धित सभी आशीषों को भी प्राप्त किया। हम इसे रोमियों 4:3-25, गलातियों 3:14-16, और कई अन्य स्थानों में देखते हैं। परन्तु सबसे उल्लेखनीय भाग यह है कि यीशु ने इन आशीषों को इसलिए प्राप्त किया वह इन्हें हमारे साथ, उसकी वाचा के विश्वासयोग्य लोगों के साथ साझा करे। मसीह में, हमारी वाचा का मध्यस्थ और वाचा के प्रधान ने, *प्रत्येक* वाचा के प्रशासन की मांग कई *प्रत्येक* मानवीय निष्ठा को पूर्ण कर दिया है, और हम प्रत्येक प्रशासन की प्रत्येक आशीष को प्राप्त करते हैं।

मसीह ने अभी तक सभी आशीषों को हमारे साथ साझा नहीं किया है। परन्तु जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 1:13, 14 में लिखा है, उसने हमें हमारे भविष्य की मीरास के बयाने के रूप में पवित्र आत्मा को दे *दिया* है। और जब यीशु पुन: आएगा, तब वह परमेश्वर के पार्थिव राज्य की सभी आशीषों को हमारे साथ साझा करेगा। यह तब घटित होगा जब मनुष्य का उसके राज्य को निर्मित करने का कार्य अन्त में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में पूर्ण होगा जिसे प्रकाशितवाक्य 21:1-22:5 में वर्णित किया गया है। इस बीच, आत्मा हमें परमेश्वर के राज्य को निर्माण करने के लिए सामर्थी बनाता और हमारे हृदयों को उसकी उपस्थिति का सदैव आनन्द लेने के लिए तैयार करता है।

सारांश

अनुग्रह की वाचा के ऊपर इस अध्याय में, हमने परमेश्वर की सनातन सम्मति को उसके समयकाल, त्रिएकत्व में व्यक्तियों की भूमिकाओं, और अनुग्रह की वाचा में परमेश्वर की सनातन सम्मति की पूर्णता को देखते हुए खोज की। हमने वाचा को परमेश्वर के विधान के कार्य के रूप में विचार करते हुए मनुष्य के पाप, और मसीह हमारे मध्यस्थ के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए किया। हमने अनुग्रह की वाचा के तत्वों को ईश्वरीय परोपकारिता, मानवीय निष्ठा, और आशीषों और शापों के परिणाम से मिलकर बने हुए होने के रूप में वर्णित किया। और हमने आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद और यीशु की अधीनता में अनुग्रह कीवाचा के ऐतिहासिक प्रशासन का सर्वेक्षण किया है।

धर्मवैज्ञानिक मानवविज्ञान की अभी तक की इस पूरी श्रृंखला में, हमने मनुष्य की अवस्था को परमेश्वर के निष्पाप स्वरूपों के रूप में हमारी मूल पाप की अवस्था, पाप में गिरे हुए पापियों के रूप में हमारी श्रापित अवस्था, और यीशु मसीह में हमारे अनुग्रहकारी छुटकारे के होने से पता लगाया है। हमने यह भी देखा कि इन अवस्थाओं में से हमें लाने के परमेश्वर के प्रयोजन अच्छे और परोपकारी हैं – उसने पहले हमारे बचाव को निर्धारित किए बिना हमें पाप के परिणामों से पीड़ित नहीं होने दिया। और हमारी छुटकारा पाई हुई अवस्था में, हम ठीक उसी स्थान पर है जहाँ पर वह हमें चाहता था ताकि वह अपनी योजना को पूरा कर सके। हमें हमारे प्रथम माता पिता को राज्य-निर्माण के आदेश को निरन्तर पूरा करते रहने के लिए आत्मिक रूप से सामर्थी बनाया गया है। हमें हमारे प्रत्येक अपराध से क्षमा किया गया है, वाचा के प्रत्येक शाप को हम पर रोक दिया गया है, ताकि अब जो कुछ करने के लिए हमारे पास बचा है वह मात्र उसकी परोपकारिता की स्तुति, उसकी वाचा की निष्ठा में जीवन यापन, और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की हमारी अन्तिम आशीषों की प्रतिक्षा करना है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम